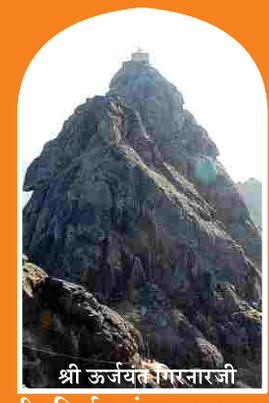

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2545-2546

वर्ष : 10	अंक : 3	मुम्बई, अक्टूबर 2019	पृष्ठ : 40	मूल्य : ₹25
VOLUME : 10	ISSUE : 3	MUMBAI, OCTOBER 2019	PAGES : 40	PRICE : ₹25

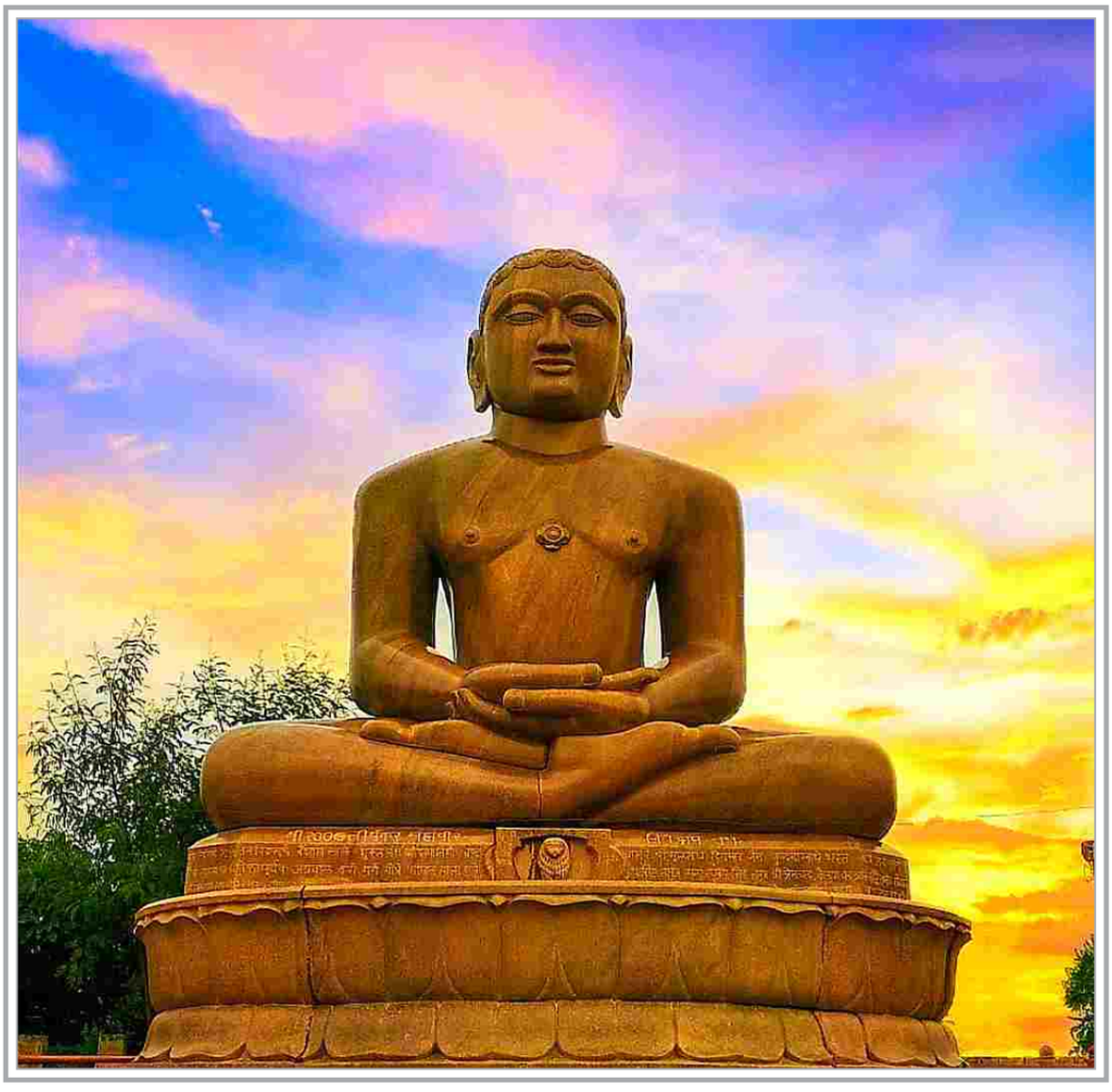

अहिंसा स्थल महरौली, दिल्ली में विराजमान भगवान महावीर स्वामी की अद्वितीय प्रतिमा

भगवान महावीर स्वामी के 2546वें मोक्ष कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय

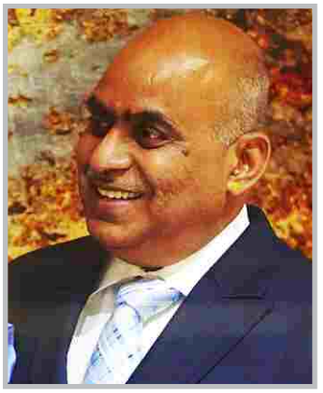

जैन धर्म के तीन मुख्य आधार हैं देव, शास्त्र और गुरु। देव और शास्त्र तो मूर्त रूप में हमारे साथ हैं, जिनके बारे में हम पढ़ सकते हैं, समझ सकते हैं और जीवन में उतारने का प्रयास कर सकते हैं । हमें गर्व है कि हम जैन कुल में जन्मे हैं और देव दर्शन कर उन जैसा बनने की कामना तो कर सकते हैं और शास्त्रों के स्वाध्याय कर सकते हैं उन सब अच्छी बातों को जीवन में उतार सकते हैं, और जो कामना हमनें प्रभु मूरत देख उन जैसा बनने का विचार किया था, वह कामना की पूर्ति में शास्त्र स्वाध्याय हमारे लिए काम आता है। परंतु हम मनुष्य हैं प्रमादवश हम इस पथ पर किंचित चलना छोड़ दें, और पुनः देव-शास्त्र की शरण में आने में कहीं यह जीवन ही न निकल जाये तो कोई तो हो जो हमें हमारे जीवन के परम सत्य से जोड़े रखे, कोई हो जो स्वयं प्रगति पथ पर चलें और हमें भी प्रेरणा दें उस सच्चे पथ पर चलने की, तो जहां देव और शास्त्र हमारे बीच मूर्त रूप में हैं, तो कोई हो जो जीवंत हो, जो हमारे जैसे हों, धर्म का पहिया चलाने और चलवाने वाले हों और यह सब कार्य गुरु के अलावा कौन कर सकता है? और कहा भी गया है न 'गुरु बिन ज्ञान कहाँ से लाऊं' 'गुरु बिन जीवन की सूखी बगिया' अगर जीवन की बगिया को सार्थक जीवन की बगिया जैसा महकाना है तो गुरुशरण की अतिआवश्यकता होती है और जैन धर्म के आधारों में एक आधार गुरु भी है ।

'गुरु' शब्द में 'गु' का अर्थ है 'अंधकार' और 'रु' का अर्थ है 'प्रकाश' अर्थात गुरु का शाब्दिक अर्थ हुआ 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक'। सही अर्थों में गुरु वही है जो अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करे और जो उचित हो उस ओर शिष्य को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे।

दिगम्बर जैन साधु चलते फिरते तीर्थ कहलाते हैं, क्योंकि वह उसी साधना में लगे हैं जिसमें तपकर तीर्थंकर मोक्ष गए हैं, और जो ज्ञान जिनवाणी में, शास्त्रों में लिखा है उस ज्ञान का वह जीवंत प्रयोग करते हैं । जो श्रावक साधु बनना चाहता हैं वह साधुपद धारण करने के पूर्व कड़ी परीक्षा को उत्तीर्ण करता है तब दीक्षा धारण कर पाते हैं । दिगम्बर साधु जीवन की प्रत्येक परीक्षा, पूर्व कर्मोपार्जित अंतराय आदि शुभाशुभ कर्म बिना किसी राग द्वेष भाव के सहते हैं और समय अपनी गति से बढ़ता रहता है और समय आ जाता है जब इस काया में उन साधु का जीवन भी पूर्ण होने को होता है, यह काल जीवन के अंतिम 12 वर्षों का हो सकता है या 12 घंटे का भी, इसे सल्लेखना काल कहते हैं, सल्लेखना जब अपने चरम पर पहुँचती है तो काल आ जाता है यम सल्लेखना का। जिसमें प्रत्येक वस्तु और चारों प्रकार के आहार का त्याग कर दिया जाता है, इस समय को मृत्यु का महोत्सव काल कह सकते हैं ।

95 वर्ष की अवस्था में 55 वर्षों से दीक्षित स्व-पर कल्याणरत परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज का रविवार दिनांक 22/09/2019 समय 2:40 प्रातः ब्रह्म मुहुर्त में उत्तम समाधि मरण हुआ। आचार्य श्री 108 विद्यानंद जी महाराज का जैन धर्म व प्राकृत भाषा के प्रचार प्रसार में अतुलनीय योग रहा, उनकी देह भले ही नष्ट हो गई है पर उनके विचार मानवजाति को सदियों तक आलोकित करते रहेंगे। उनके चरणों में विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट होने के उपरांत मुनि श्री 108 चिन्मय सागर जी महाराज (जंगल वाले बाबा) ने 12 अक्टूबर 2019 को यम सल्लेखना धारण की है, प्रभु करे आपकी समाधि उत्कृष्ट हो यही प्रार्थना है ।

साधुओं के समाधि लेने पर हम श्रावकों को उतना ही दुख होता है, जितना परिवार से पिता के जाने पर, परंतु जब साधु स्वयं समाधि को उत्सव के रूप में मानते हैं तो प्रेरणा बन जाते हैं।

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

सम्पादकीय

वर्तमान तीर्थनायक, विश्ववन्द्य, भगवान् महावीर स्वामी के पावन निर्वाण कल्याणक दिवस दीपावली-पर्व की शुभकामनाएँ तथा हार्दिक भावना है कि नववर्ष वीर नि. सं. 2546 आपके जीवन में नव-सौभाग्य, समृद्धि, आरोग्य के साथ आये।

विभिन्न नगरों/ग्रामों में चातुर्मास-साधनार्थ विराजमान पूज्य साधुगण एवं आर्यिका माताओं द्वारा जिनधर्म की प्रभावना हुई है अब दीपावली उपरान्त चातुर्मास की निष्ठापना उपरान्त वे गाँव -गाँव व नगर-नगर भ्रमण करते हुए धर्म का प्रचार प्रसार करेंगे।

तीर्थ रक्षा कलश योजना - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी गत 117 वर्षों से जैन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण संवर्धन के पुनीत कार्य में संलग्न है। इस अवधि में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा तीर्थक्षेत्रों में आगत अनेक समस्याओं के निराकरण के साथ तीर्थस्थ धर्मायतनों के जीर्णोद्धार एवं उनके विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की सर्वप्राचीन एवं प्रतिष्ठित संस्था इस कमेटी को मजबूत करना पूरी समाज का कर्तव्य है। एतदर्थ हमारी भावना है वर्षायोग की स्थापना के समय समाज द्वारा मंगल कलशों की स्थापना की जाती हैं, उन कलशों में एक कलश "तीर्थ रक्षा कलश" के नाम स्थापित किया जाये तथा उस कलश की प्राप्त राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेजी जाये। तीर्थक्षेत्र कमेटी के गठन काल से ही कमेटी को आर्थिक रूप से समर्थ बनाने की दिशा में हमारे पूज्य आचार्यों एवं साधुगण का यथेष्ट भरपूर आशीष प्राप्त होता रहा है। आशा है समाज इस योजना को निरन्तर चलाएगी एवम् हमारे पूज्य साधुओं का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

सदस्यता अभियान - तीर्थक्षेत्र कमेटी से देश के सभी भागों के साधर्मियों को जोड़ने के लिये सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। हम पूरे देश भर की सक्रिय श्रद्धालु समाज से पुरजोर से अपील करते हैं कि वे आगे आकर इस अभियान से जुड़ें तथा कमेटी के विद्यमान प्रत्येक सम्मानित सदस्य से निवेदन है कि वे कम से कम पाँच सज्जनों को कमेटी से जोड़ने का संकल्प लें, इस तरह हम 25000 नये सदस्य बनाने में सफल हो पायेंगे। किसी भी संस्था की सबसे बड़ी ताकत उनकी सदस्य संख्या पर आधारित होती है। अत: सदस्य बनकर या सदस्य बनाकर संस्था को सुदृढ़ और व्यापक बनाने में योगदान करके पुण्यार्जन करें।

तीर्थ रक्षा कोष - विभिन्न तीर्थों की सुरक्षा तथा वहाँ की समस्याओं के निराकरण हेतु रक्षा-कोष की वृद्धि की नितान्त आवश्यकता है अत: कमेटी के सदस्यों से निवेदन है कि वे अपनी क्षमतानुसार आर्थिक सहयोग करते हुए कमेटी को सुदृढ़ आधार प्रदान करें तथा अपने आस-पास के इष्ट मित्रों/स्नेही जनों/रिश्ते-नातेदारों को आर्थिक सहयोग हेतु प्रेरित करें। जीवन में अनेक प्रसंग आते हैं जब हमारा मन दान की ओर सहज रूप से बन जाता है अत: कृपया अपने जन्म-दिवस, विवाह वर्षगाँठ (मैरिज एनिवर्सरी), पुत्र-पुत्रियों के विवाह संस्कार अथवा परिजनों की पुण्यतिथि के अवसर पर निश्चित रूप से दान राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी को भिजवायें। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार राशि जमाकर तीर्थरक्षा के पावन कार्य में हाथ बढ़ाकर महान् पुण्य का भागीदार बन सकता है।

जनगणना - कुछ समय बाद जनगणना प्रारम्भ हो रही है, जो हर 10 साल में एक बार होती है, परन्तु हमारी दूरदर्शिता के अभाव में तथा गोत्र के प्रति आकर्षण होने के कारण नाम में जैन के स्थान पर गोत्रादि अंकित होने के कारण हमारी पहचान जैन रूप में नहीं होकर हिन्दू या अन्य रूप में होती है, जिससे हमारी जनसंख्या डेढ़ करोड़ से अधिक होने पर भी सरकारी आकड़ों में 44 लाख मात्र दर्शायी जाती है, अत: हमारी जनसंख्या की सही शक्ति सरकार को ज्ञात हो सके एतदर्थ मैं पूरे समाज से आह्वान करता हूँ कि सब अपने नाम में जैन शब्द अवश्य लिखें।

तीर्थक्षेत्रों पर सावधानियाँ- तीर्थ हमारी आस्था के प्रतीक हैं और संस्कृति के सुदृढ़ आधार हैं। उनकी रक्षा करना, उनकी सुचारु व्यवस्था बनाने में सहयोग करना और उनके सौन्दर्य को कायम रखना हम सबका दायित्व है। गत दिनों तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व में पदाधिकारियों के निरीक्षण दल द्वारा शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की यात्रा की गयी, जिससें हमने पाया कि तीर्थ कर्मचारियों द्वारा नियमित सफाई करने के बावजूद वहाँ गंदगी पायी जाती है। कारण यह कि यात्री-गण अपने खाने पीने की वस्तुओं के अवशिष्ट (रैपर्स, पाऊच, पानी की बोतलें व अन्य कूड़ा आदि) वही पर फेंक कर पवित्र पर्वत को अपवित्र बनाने का अशोभनीय कार्य करते हैं, जिससे पर्वतराज पर गन्दगी पसरती जा रही है और क्षेत्र की सुन्दरता में कमी आ रही है।

अत: आइये, हम सब अपने श्रद्धा के पावन धाम तीर्थराजों को स्वच्छ रखने का संकल्प लें। न स्वयं गन्दगी नहीं करेंगे और दूसरों को भी गन्दगी करने से रोकेंगे। दीपावली के परम पावन पर्व पर हम सभी अपने घर दुकानों की साफ-सफाई के साथ तीर्थों को स्वच्छ, निर्मल और सुन्दर बनाने की दिशा में एक जुटता दिखायेंगे।

दिनांक 26 अक्टूबर, 2019 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी गौरवपूर्ण सेवाओं के 117 वर्ष पूर्ण कर रही है, इस अवसर पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र के. गोधा

राजेन्द्र के. गोधा
कार्याध्यक्ष/महामंत्री

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 3 अक्टूबर 2019

श्री प्रभातचन्द्र जैन	अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा	कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री जयकुमार जैन	मंत्री

संपादकीय सलाहकार
पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा
डॉ. श्रीमती नीलम जैन
डॉ. अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल
श्री गणेशकुमार राणा
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल
प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा

संपादक-साज सज्जा
श्री मनीष बैद

संपादक
श्री उमानाथ दुबे

उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन
श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन
श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

युग-प्रभावक आचार्यश्री विद्यानन्द मुनिराज	6
आध्यात्मिक भजनों के मर्मज्ञ आचार्यश्री विद्यानन्द मुनिराज	8
आत्मिक उजाले का पर्व है : दीपावली	12
परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के स्मारक	13
शाकाहार ही सर्वश्रेष्ठ आहार हैः मुनिश्री प्रभातसागर	17
बेहतर दिखने नहीं, बेहतर बनने का करें प्रयासः मुनिश्री अभयसागर	17
पेंदुर, सिंधु दुर्ग, महाराष्ट्रः 11 वीं शताब्दी की जैन प्रतिमाएँ तथा मंदिर अवशेष	18
भारत वर्ष का एकमात्र नन्दीश्वर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र 'पांचालेश्वर' महाराष्ट्र	19
तमिलनाडु अंचल द्वारा प्राचीन तीर्थक्षेत्रों की यात्रा आयोजित	20
प्रवर्तिका गणिनी आर्यिका श्री गुरुनंदनी माताजी के सयंम के 25 वर्ष	21
लोहगढ़ की गुफाओं में 2100 वर्ष प्राचीन जैन शिलालेख प्राप्त	24

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई.मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई. मेल अथवा मोबाईल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा मीटिंग आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोटः

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

आचार्यश्री विद्यानन्द मुनिराज के समाधि मरण पर श्रद्धांजलि विशेष

युग-प्रभावक आचार्यश्री विद्यानन्द मुनिराज

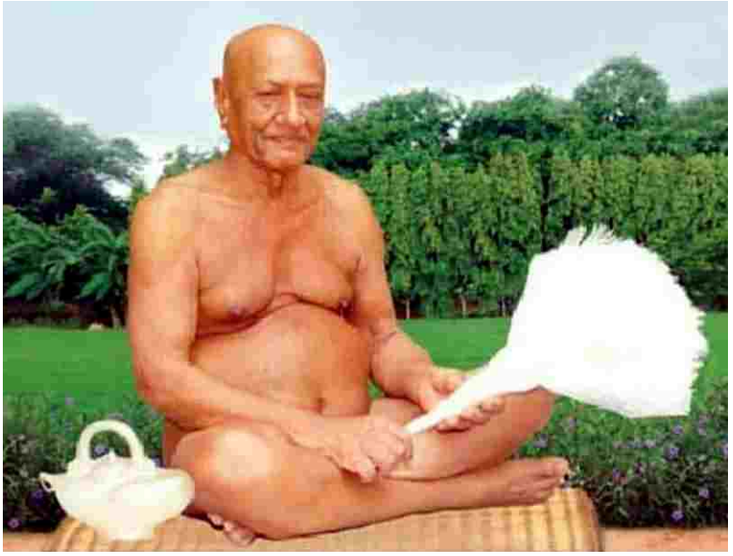

आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज युग प्रभावक आचार्य थे। वे एक ऐसे महान् राष्ट्रसंत थे जिन्होंने भारत एवं भारतीय संस्कृति के साथ ही श्रमण संस्कृति, साहित्य एवं समाज के विकास में जो महनीय योगदान दिया है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे युगांतकारी भी थे, एक समय जब जैन समाज में मुनिराजों की संख्या बहुत कम थी, उस समय उन्होंने एक प्रभावक मुनिराज के रूप में जैनधर्म-संस्कृति-समाज-साहित्य और प्राकृत भाषा को एक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान दिलाने में अपनी महनीय भूमिका निभाई।

सन् १९७४-७५ में जब राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीर्थंकर महावीर भगवान का पच्चीस सौवां निर्वाण कल्याणक महोत्सव वर्ष भर बड़े उत्साह से मनाने का प्रसंग आया तब आपकी अगुवाई में जैन समाज के दोनों संप्रदायों दिगंबरों व श्वेतांबरों ने मिलकर इस महोत्सव को प्रभावशाली रूप में मनाने में जो एकता और उत्साह का परिचय दिया, वह सम्पूर्ण जैन संस्कृति के इतिहास का एक अविस्मरणीय और सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

इसी अवसर पर सम्पूर्ण जैन समाज ने उदार हृदय से एक पचरंगा ध्वज, 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सूत्र से युक्त प्रतीक चिन्ह और 'समणसुत्तं' के रूप में एक प्रतिनिधि प्राकृत आगम शास्त्र स्वीकार किया। इसी अवसर पर भारत की राजधानी दिल्ली में जैन धर्म के दोनों संप्रदायों के प्रमुख एवं ज्येष्ठ संतों को एक मंच पर लाने और परस्पर सौहार्द्र तथा समन्वय का जो अभूतपूर्व वातावरण बना, वह सब आपके ही प्रयासों का सुफल था। इसी अवसर पर दोनों संप्रदायों के श्रेष्ठ विद्वानों को तत्कालीन उपराष्ट्रपति माननीय श्री बी.डी. जत्ती द्वारा पुरस्कृत किया गया।

आपके नेतृत्व में श्रवणबेलगोला स्थित प्रत्येक बारह वर्ष में होने वाले गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान की विशाल प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के सहस्राब्दि वर्ष को, आचार्य कुन्दकुन्द के द्विसहस्राब्दी समारोह को, अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के सहस्राब्दी समारोह को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष ख्याति दिलाने और इसके विशाल स्तर पर आयोजन का प्रसंग आज भी अविस्मरणीय है। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राजपथ पर प्रदर्शित की जाने वाली शताधिक झाँकियों में आपकी प्रेरणा से जैन संस्कृति को दर्शाने वाली 'गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान' की प्रतिमा से युक्त झाँकी को स्थान मिला, जिसे भारत सरकार द्वारा वर्ष २००६ का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

अनेक वर्षों से उपेक्षित भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली, कुण्डग्राम का विकास न होने की उन्हें बहुत चिंता थी। इसके लिए उन्होंने जो प्रयास किए वह आज सभी के समक्ष भव्य विशाल जिनालय, तीर्थंकर महावीर की भव्य प्रतिमा और भव्य परिसर के विकास तथा प्रत्येक वर्ष भव्य रूप में यहाँ महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव मनाए जाने के रूप में प्रस्तुत हैं। यह आपका समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति महत्त्वपूर्ण उपकार है।

प्राकृत भाषा और साहित्य के प्रति तो आपके मन में अत्यधिक अनुराग था किन्तु जनमानस में प्राकृत साहित्य के प्रति उपेक्षा को वह आंतरिक रूप से अनुभव कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने अनेक प्राकृत सम्मेलन आयोजित कराये। २८ से ३० अक्टूबर १९९४ में प्राकृत भारती, दिल्ली में आयोजित एक सम्मेलन में आचार्यश्री से चर्चा के दौरान मैंने (प्रो. फूलचंद जैन प्रेमी, वाराणसी) उनके समक्ष संस्कृत दिवस, हिन्दी दिवस आदि की तरह प्राकृत भाषा और इसके विकास के लिए प्रत्येक वर्ष की श्रुतपंचमी (ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी) के दिन प्राकृत दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा।

यह प्रस्ताव उन्हें तथा सम्पूर्ण सम्मेलन में उपस्थित विद्वानों को इतना अधिक पसंद आया कि उन्होंने प्रत्येक वर्ष श्रुतपंचमी को प्राकृत दिवस में रूप में मनाने की घोषणा ही कर दी और कई वर्षों तक इस प्राकृत दिवस के दिन आपने प्राकृत कवि सम्मेलन आयोजित किए और विद्वानों को प्राकृत कविताएँ लिखने हेतु प्रोत्साहित किया। यही कारण है कि आज राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृत भाषा और साहित्य की एक विशेष पहचान बनी और महत्ता सिद्ध हुई।

आपने अनेक उत्कृष्ट विद्वानों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द जैसे

अनेक महान् आचार्यों के शास्त्रों को जन-मानस में प्रचलित करने हेतु समयसार, रयणसार जैसे ग्रन्थों का सरल, सुबोध शैली में सम्पादन, अनुवाद कराकर प्रकाशित कराया। ये ग्रंथ समाज में आज भी लोकप्रिय हैं। आपके प्रभावक प्रवचनों को आलेखबद्ध कर अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जैन साहित्य के विकास में आपका बहुमूल्य योगदान है।

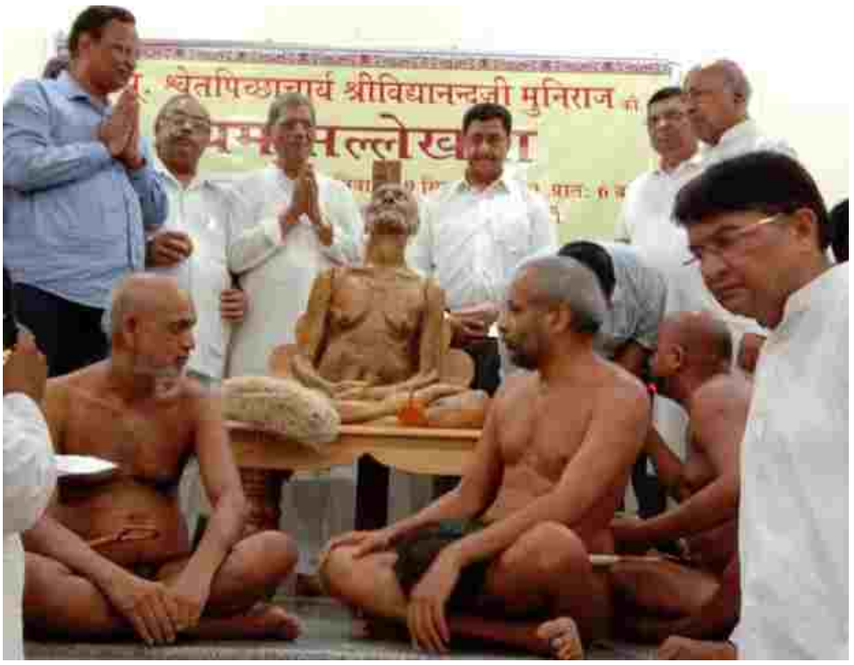

जब मैंने सन् १९७६ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 'मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की तब इस शोधप्रबंध के प्रकाशन के पूर्व अनेक विषयों पर आपसे विशेष मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। जब मैंने उन्हें श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी के शताब्दी समारोह की स्मारिका भेंट की और यह बताया कि आरंभ से अब तक इस विद्यालय में पढ़े सभी विद्यार्थियों की सूची में आपके पिताश्री श्री कालप्पा अन्ना उपाध्ये जी का भी नाम है, जिन्होंने कि सन् १९०६ में यहाँ प्रवेश लेकर जैन शास्त्रों का अध्ययन किया था, तो वे यह जानकार अत्यंत हर्षित और गर्वित हुए।

श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली में प्राकृत विभाग का शुभारंभ भी आपकी ही प्रेरणा से हुआ था तथा यहीं के जैनदर्शन विभागाध्यक्ष एवं मेरे ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. अनेकान्त कुमार जैन द्वारा संपादित एवं प्रकाशित प्राकृत भाषा की प्रथम पत्रिका 'पागद भासा' के नामकरण का श्रेय भी आपको ही है। सभी लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि के विकास हेतु एवं विशेष प्रचार हेतु आपने अनेक प्रयास किए।

आप बहुत ही ज्ञान पिपासु थे। जैन एवं वैदिक शास्त्रों के मर्मज्ञ ज्ञाता होकर भी आप समय-समय पर विद्वानों से इन ग्रन्थों का सामूहिक रूप से स्वाध्याय करवाने में बहुत रुचि लेते थे। स्वयं भी अहर्निश विविध शास्त्रों का पारायण करते रहते थे और जब भी कोई विद्वान आपके दर्शनार्थ पहुँचता, आप उनसे यहाँ-वहाँ कि चर्चा किए बिना सीधे शास्त्रों में निहित ज्ञान की चर्चा करते रहते थे। मुझे स्वयं उनके द्वारा स्वाध्याय किए हुए शास्त्रों को देखने का सुअवसर मिला। उनके पास संग्रहीत प्रत्येक शास्त्र के महत्त्वपूर्ण अंश लाल-पीली-नीली स्याही से रेखांकित मिलेंगे।

जब-जब जैन धर्म, समाज और संस्कृति पर कोई भी बड़े संकट आए, तब-तब आपने एक संकटमोचक बनकर अपने प्रभाव से उन्हें दूर किया। आपने धर्म और संस्कृति को सार्वजनिक जीवन व्यवहार का अंग बनाने का श्लाघनीय प्रयत्न किया। आपने जैन धर्म, साहित्य, समाज, संस्कृति और इतिहास के विकास के नए क्षितिज उन्मुक्त किए और जैनधर्म को जनधर्म बनाने का सूत्रपात किया। आपको जैनधर्म के आध्यात्मिक भजन बहुत प्रिय थे। अपनी प्रत्येक धर्म सभा के पूर्व नियमित रूप में प्राचीन कवियों द्वारा रचित शास्त्रीय संगीत पर आधारित ऐसे ही आध्यात्मिक भजनों को उत्कृष्ट गायकों से सम्पूर्ण धर्म सभा में सुनते थे। 'तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा' – यह भजन तो उन्हें इतना प्रिय था, कि उनकी हर धर्म सभा में भी इसका सामूहिक रूप से गान होता था। तब पहली बार आकाशवाणी से जैन भजन प्रसारित हुए थे तथा पूरे देश में इसी प्रकार के भजनों के कैसेट आदि बनने की परंपरा की भी शुरुआत हुई।

आपने सम्पूर्ण देश में पद विहार करते हुए अपने उदार एवं समन्वय से भरपूर चिंतन एवं प्रवचनों के द्वारा जैन ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय समाज को भी प्रभावित किया। अहिंसा, अनेकांतवाद, स्याद्वाद, अपरिग्रह एवं समता जैसे जैनधर्म के अनेक महान् सिद्धान्त, सम्पूर्ण मानव समाज और राष्ट्र के लिए ये सब कैसे उपयोगी हैं, इन्हें जन-जन को समझाया।

इस प्रकार एक उत्कृष्ट क्षपकराज के रूप में आपने अपने दीर्घ संयम साधना का आदर्श प्रस्तुत करते हुए यम सल्लेखना पूर्वक अश्विन कृष्ण अष्टमी वीर निर्वाण संवत् २०४५ (दिनांक २२/०९/२०१९) के ब्रह्म मुहूर्त (२:४० पूर्वाह्न) में अनेक आचार्य संघों और विशाल जनसमुदाय के समक्ष दिल्ली स्थित कुन्दकुन्द भारती में समता पूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया। ऐसे महान् प्रभावक आचार्य मुनिराज को बारंबार नमोस्तु।

- प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी,

आध्यात्मिक भजनों के मर्मज्ञ आचार्यश्री विद्यानन्द मुनिराज

आज मेरा हृदय बार-बार उनके प्रिय भजनों को स्मरण कर रहा है, जिन भजनों के भावों को उन्होंने अपनी साधना में जीवंत किया था। निश्चित ही आचार्यश्री के इतने व्यापक प्रभाव की नींव उनके संयम-साधना ज्ञानार्जन में निहित है किन्तु इस नींव की एक मजबूत शिला वे आध्यात्मिक जैन भजन भी हैं जो प्राचीन कवियों द्वारा लिखित दुर्लभ शास्त्रीय राग-रागनियों पर आधारित हैं। ये अनमोल भजन जो न सिर्फ उनकी साधना में निरंतर साधक बने बल्कि इन जैन आध्यात्मिक भजनों को आपने हर भक्त के हृदय में स्थापित करके, इस आध्यात्मिक भक्ति गंगा को घर-घर पहुंचाकर धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाया आज मैं उन्हीं भजनों के माध्यम से आचार्य श्री के संगीतमय आध्यात्मिक हृदय को आप तक पहुँचाने का प्रयास करते हुए अपने भाव समर्पित कर रही हूँ।।

नई दिल्ली। पूज्य गुरुवर आचार्यश्री विद्यानंद जी मुनिराज का आशीर्वाद मिलना, उनकी प्रवचन सभाओं में उनके प्रिय भजनों को सुनना, समय-समय पर भजन, मंगलाचरण एवं संचालन के दायित्व को निभाते हुए उनकी प्रतिष्ठित एवं अनुशासित धर्म सभाओं में अपनी सहभागिता देना, ये मेरा परम सौभाग्य रहा है।

विश्वास ही नहीं कर पा रही हूँ कि अब गुरुवर के साक्षात् दर्शनों से हम सदा के लिए वंचित हो गए हैं। आज आचार्यश्री शरीर रूप में हम सभी के बीच नहीं हैं किन्तु अपनी संयममयी ज्ञान साधना से वे अमर हो गए हैं। उनकी स्मृतियाँ हम सभी के अंतर्मन में सदैव के लिए विद्यमान रहेंगी। आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने अनेक धर्मों के ग्रंथ पढ़े, कई भाषाओं का ज्ञानार्जन किया। आचार्यश्री ने सिखाया कि धर्म, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर विश्व शान्ति और कल्याण की भावना से सभी को एकता के सूत्र में जोड़ना ही प्रत्येक मानव का धर्म है।

आचार्य श्री की प्रेरणा से ऐसे कई कार्य हुए जिससे जैन धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं प्राकृत भाषा को पूरे देश में विशिष्ट पहचान मिली। उन्हें हजारों श्लोक, सूत्र, गाथाएँ आदि अनेक उद्धरण कंठस्थ थे। अपने ज्ञान से जैन धर्म, संस्कृति और साहित्य की रक्षा के लिए सदैव आगे रहे।

मेरा बचपन वाराणसी में बीता तब से ही दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से जुड़े होने के कारण से और आगे दिल्ली में मैंने निरंतर कला और मीडिया क्षेत्र से जुड़कर ही जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का दायित्व निभाने में अपना गौरव समझा और प्राचीन जैन आध्यात्मिक भजनों से धर्म प्रभावना को अपना आधार बनाया। इसमें आचार्यश्री ने भी मेरा सदैव मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन किया।

सन् १९४६ जब आचार्य श्री 'क्षुल्लक श्री पार्श्वकीर्ति जी के रूप में थे तब उन्होंने हाथ से लिखकर एक 'संगीत' नाम से पत्रिका निकालनी आरंभ की थी। आचार्यश्री को आध्यात्मिक संगीत से इतना प्रेम था कि सन् १९६६ में आचार्य श्री की प्रेरणा से ही एक संघ का गठन किया गया और प्राचीन जैन कवियों के शास्त्रीय संगीत पर आधारित जैन आध्यात्मिक भजनों को संकलित करके प्रकाशित कराया गया। पहली बार जैन भजनों की ग्रामोफोन पर रिकार्डिंग करवाई गई और वह सुखद पल भी आया जब प्रथम बार आकाशवाणी दिल्ली से पूरे देश में जैन भजनों का प्रसारण हुआ। प्राचीन जैनाचार्य श्री पार्श्वदेव जी द्वारा रचित ग्रंथ 'संगीत समयसार को आचार्य श्री की प्रेरणा ने ही, श्री कैलाश चन्द देव बृहस्पति जी द्वारा पुनः सम्पादन करवाकर कुन्द-कुन्द भारती से प्रकाशित कराया गया।

संगीत उनके अंतर्मन में विद्यमान था, इसलिए वे संगीत साधकों का बहुत सम्मान करते थे, अतः उनके लिए 'संगीत समयसार' नाम से पुरस्कार की श्रृंखला भी आरंभ करवाई। प्रस्तुत लेख के माध्यम से उस संगीतमय पक्ष की भावाभिव्यक्ति कर रही हूँ जो आचार्यश्री के अंतरमन के भावों की साधना से जुड़ा हुआ रहा। जिस समय फिल्मी गानों के आधार पर कुछ शब्दों को बदलकर जैन समाज में भी भजनों का युग आरंभ हो गया था और प्राचीन शास्त्रीय राग-रागिनियों पर आधारित आध्यात्मिक भजनों का प्रायः लोप हो रहा था, ऐसे समय में शास्त्रीय संगीत प्रेमी, आध्यात्मिक भजनों के रसिक, प्राचीन कवियों द्वारा लिखित भजनों के एक-एक शब्द को आत्मसात करने वाले आचार्यश्री ने स्वयं भी कई भजनों की रचनाएँ कीं। साथ ही धर्म प्रभावना करने के

लिए, रचनाकारों को भी भाव प्रधान भजनों को लिखने की प्रेरणा देकर, सुंदर आध्यात्मिक भजनों की रचनाएं करवाईं और इनके साथ ही प्राचीन भजनों को अपनी प्रवचन सभाओं में समवेत स्वर में स्वयं गाकर एवं शास्त्रीय संगीत के मधुर कण्ठ साधकों से प्रस्तुत करवाकर जन-जन तक पहुँचाया। यहाँ हम बानगी के रूप में उनके कुछ प्रिय भजनों की आरंभिक पंक्तियों को प्रस्तुत कर रहे हैं -

आचार्य श्री की प्रेरणा से राजस्थान के कवि माणिकचंद पंकज जी द्वारा रचित भजन 'तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा, मेटो-मेटो जी संकट हमारा..'आज भी जैन श्रावकों को उसी भक्ति की गंगा में सराबोर कर देता है, जिस आध्यात्मिक साधना में जिनेन्द्रदेव की भक्ति करते हुये अपनी विशाल प्रवचन सभाओ में नियमित सामूहिक रूप में इस भजन को गाते थे।

आचार्य श्री द्वारा रचित भजन 'मिट्टी के नौमहले बैठा हंस ज्योति फैलाए...सोहं सोहं,सोहं,सोहं का अमृत नाद सुनाए...जिसने भी सुना उसके हृदय पटल पर यह सदा के लिए अंकित हो गया।

आधुनिकता की चकाचौंध और जीवन की आपाधापी में जब व्यक्ति प्रभु की शरण और भजन से दूर हो जाता है तब कविवर भूधरदास जी का ये भजन भटके मनुष्यों को सही राह दिखाने में सार्थक सिद्ध होता है :-

'भगवंत भजन क्यों भूला रे,
यह संसार रैन का सपना, तन-धन वारी बबूला रे...

आचार्यश्री का कथन था कि इस भजन को गाने से प्रभु भक्ति में रमने की भावना पुन: जागृत हो जाती है और भटके हुए श्रावकों को भक्ति की राह मिल जाती है। उनकी भावना थी कि घर-घर में माताएँ अपने बच्चों को 'पंचपरमेष्ठी लोरी' ('अरिहंत पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी, मेरे भैया, अरिहंत सहज है होना रे') सुनाएँ और जैन धर्म के संस्कारों से उनका अभिसिंचन करें।

उनको प्राचीन जैन भजन रचनाकार श्री द्यानतराय जी का ये भजन बहुत ही प्रिय था जिसके भाव अमरता को प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों से इंगित हैं 'अब हम अमर भये न मरेंगे। तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरेंगे। वस्तुत: यह भजन हमें यह भी सिखाता है कि हमें मिथ्यात्व को छोड़कर सम्यक् दर्शन आदि त्रिरत्नों की प्राप्ति करके, जन्म-मृत्यु से ऊपर उठकर अमर होना है।उन्होंने अपने इस प्रिय भजन को जीवन में आत्मसात किया और वे अमर हो गए।आपके लिए जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत का जीवन सदैव से ही अति वंदनीय रहा है। तभी तो आचार्यश्री की प्रेरणा से कुंद-कुंद भारती परिसर में भरत भगवान की अति मनोरम प्रतिमा के साथ, देश का पहला भरत भगवान का मंदिर स्थापित हुआ। इन्हीं भरत चक्रवती के नाम पर ही आज हमारे देश का नाम भारत है, इस बात को आचार्यश्री ने जन-जन तक पहुँचाया। इसीलिए उनके सर्व प्रिय भजनों में से 'भरत भगवान' का ये भजन उन्हें

अत्यंत प्रिय था –

'वे तो अन-धन सबके त्यागी ,भरत जी घर ही में वैरागी...'

इस भजन के माध्यम से आचार्यश्री सदैव ये उपदेश देते थे कि जैसे अनगिनत सम्पत्ति और राजपाट होने के बाद भी भरत जी, एक चक्रवर्ती सम्राट का कर्त्तव्य निभाते हुए भी, केवल अपनी आत्मा का चिंतन करते हुए वैरागी जीवन जीते थे, ऐसे ही श्रावकों को गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी, निरंतर अपनी आत्मा का चिंतन करते हुए, धर्म मार्ग की ओर अग्रसर रहना चाहिए। इस संसार में सिर्फ एक धर्म ही अपना है इसकी शरण में जो जाएगा वो तर जाएगा इन भावों से ओतप्रोत प्राचीन कविवर बुधजन का ये भजन -

धर्म बिना कोई नहीं अपना,कोई नहीं अपना ,
सुख सम्पति घर थिर नहीं जग में, जैसे रैन सपना ।

श्रावक संसार की मोह-माया के चक्कर में फँसकर धर्म न भूल जाए , इसलिए वे इस भजन को गाने की निरंतर प्रेरणा देते थे। सुख और दुख जीवन के दो पहिए हैं एक के बिना जीवन की गाड़ी आगे बढ़ ही नहीं सकती अत: अपने प्रिय भजन के माध्यम से आचार्य श्री श्रावकों को अपने दुख में न घबराकर, जिनेन्द्र भक्ति करते हुए, समभाव से दृष्टा बनकर देखने को कहते हैं -

'दुख भी मानव की सम्पत्ति है तू क्यों दु:ख से घबराता है,
दु:ख तो एक कसौटी है जिसपर मानव ही परखा जाता है ।।'

आचार्यश्री को 'कविवर बुधजन' का ये भजन बहुत ही प्रिय था -

'बाबा मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे,
सुर, नर, नरक, तिर्यंच गति में, मोको करमन घेरा रे ।

जैनधर्म का कोई निर्धारित ध्वज गीत नहीं था, इस कमी को पूरा करने के लिए उन्होंने निम्नलिखित ध्वजगीत का सूत्रपात कराया, उन्हें ये ध्वज गीत बहुत प्रिय था क्योंकि इसके बोल जैन धर्म की अत्यंत प्रभावना करते हैं -

आदि ऋषभ के पुत्र भरत का भारत देश महान् ,

1986 में गोम्मटगिरी, इन्दौर में मंत्र न्यास

ऋषभदेव से महावीर तक करें सुमंगल ज्ञान ।।

आचार्य श्री निरंतर आत्मा का चिंतन करते थे ,वे भक्तों से भी यही कहते थे कि कर्म को छोड़कर इस जगत में कोई किसी का नहीं है।चाहे चारों गतियों में से कहीं भी चले जाओ , तुम्हारे कर्म सदैव घेरे रहेंगे । इसलिए धर्म के मार्ग में बिना डिगे निरंतर चलते रहो तभी तुम्हारा कल्याण सम्भव है ।

कविवर नयनानंद जी की यह भजन भी बड़ा भावपूर्ण है –

'भजन से रख ध्यान प्राणी ...भजन से रख ध्यान...
भये भजन से अरिहंत सिद्ध,आचार्य गए निर्वान।।
चरणन से द जी म्हारी लागी लगन..लागी लागी लगन..।

कविवर द्यानतराय जी का - 'रे मन भज दीन दयाल..

कविवर भूधरदास जी का - मेरे चारों शरण सहाई ...

कविवर बुध महाचंद्र जी की रचना 'अमृत झर झुरि-झुरि आवे जिनवाणी...।

कविवर भूधरदास की रचना 'चरखा चलता नाही, चरखा हुआ पुराना...तथा 'अज्ञानी पाप धतूरा न बोए...।

इन भजनों के अलावा कुछ और अच्छे भजन इस प्रकार हैं –

'अब के ऐसी दीपावली मनाऊँ, कबहूँ फेर न दुखड़ा पाऊँ...।

'होली खेलें मुनिराज अकेले वन में , खड़े वन में...

'भज भगवंतं प्रथमाऱ्हंतं...

'जय मंगलं जयति शुभ मंगलं, जय नागपति, युवति पदमांबिके....

'जगे हैं पुण्य भव्यों के..दिगम्बर देव आए हैं...

'भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का, मजा॰ कहा नहीं जाए इस कंगाली का.... समयसार ग्रंथ की महिमा :

दया कर दयाकर दया धर्म धारी, हम आए हुए हैं शरण में तुम्हारी.... तथा 'समयसार की अद्भुत महिमा मैं बतलाऊँ भली-भली....

संस्कृत की सरस्वती वंदना-: 'जय जय हे भगवति सुरभारती , चरणऊँ प्रणमाम: ... जय जिनेन्द्र की महीमा -:

'प्रेम से कहो सभी, भक्ति से सुनो सभी, जय जिनेन्द्र,जय जिनेन्द्र...

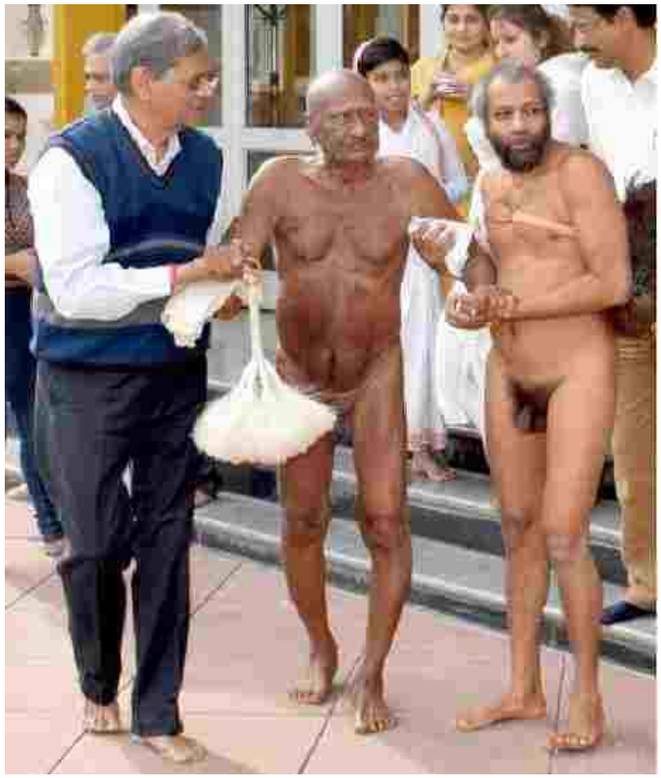

भगवान शांतिनाथ का स्तवन:

'ओ जगत के शांतिदाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी.... भगवान आदिनाथ स्तुति -:

'जय-जय श्री आदिजिन, तुम हो तारन-तरन, भविजन प्यारे... पुरुदेव गीत -:

'जय मंगलं,नित्य शुभ मंगलं..

इन सभी भजनों के माध्यम से आचार्यश्री ने 'प्रत्येक प्राणी को जीवन में निरंतर आत्मा का ध्यान, जीवन में संयम, तप, त्याग, ईश्वर ध्यान और भजन करने का उपदेश दिया। क्षपक दिगम्बर मुनि के रूप में, जीवन के अंतिम क्षणों में, दिगम्बर मुनिराजों एवं साध्वियों एवं भट्टारकों की ४८ पिच्छियों के समक्ष आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने 'यम सल्लेखना पूर्वक' निरंतर समाधिमरण पाठ, जिनवाणी, स्तुति, भजन सुनते हुए 'श्रेष्ठ समाधि मरण' प्राप्त करके, आध्यात्म और साधना की उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त किया। आचार्य श्री अमर हो गए। अब हम सभी को भी उनके उपदेशों को जीवन में उतारना है ताकि हम भी अमरता की राह में आगे बढ़ सकें। उनके उपदेशों को अपनाकर हम सभी निरंतर आध्यात्म की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण को प्राप्त करें यही भावना भाते हुए, हम अपना भी कल्याण कर सकते हैं और आचार्य श्री को सच्ची विनयांजली समर्पित कर सकते हैं ।

- डॉ. इन्दु जैन राष्ट्रगौरव

हजारों नम आँखों ने दी विदाई
युग प्रवर्तक आचार्य श्री विद्यानंद जी

नई दिल्ली। सल्लेखना से समाधि की तरफ अग्रसर आचार्य श्री विद्यानंद जी इस सदी की आध्यात्मिक उपलब्धि आचार्य श्री विद्यानंद जी अपने जीवन के महत्वपूर्ण ९५ वर्ष की अनुपम यात्रा जैन समाज को समर्पित करके १२ वर्ष पूर्व नियम सल्लेखना लेने के बाद १९ सितम्बर २०१९ को यम सल्लेखना ग्रहण कर २२ सितम्बर को प्रात: २.४० पर ब्रहम मुहूर्त में समाधि के बाद समाज में जो रिक्तता आई है आने वाले वर्षों तक उसे भरा नहीं जा सकेगा।

जैन समाज ही नहीं अपितु समूचे राष्ट्र को गर्व है की सैकड़ों वर्षों में राष्ट्रीय विचार धारा से ओतप्रोत ऐसा प्रभावशाली जैन संत आज तक अपने देश में कभी नहीं हुआ।

आचार्य श्री विद्यानंद बहुमुखी प्रतिभा के ऐसे जैन संत है जिन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन जैन संस्कृति एवं उन्नयन का जो कार्य अकेले दम पर किया है अनेक संस्थाएं एक साथ मिलकर भी वह काम नहीं कर सकती। एक मूक साधक की तरह जीवन पर्यंत अहर्निश साधना में रत रहे। आचार्य देशभूषण जी महाराज से दीक्षा लेने के बाद उन्हीं के प्रेणना एवं मार्गदर्शन में कन्नड़ भाषा में लिखे अनेक प्राचीन ग्रन्थों का हिंदी व संस्कृत में अनुवाद किया। उनके द्वारा जैन धर्म व् संस्कृति से सम्बंधित अनेक लेख व् किताबें भी प्रकशित हो चुकी हैं

उनकी बहुमुखी प्रतिभा के कायल हो गये आचार्य श्री देशभूषण जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित कर आचार्य पद दिया।

उनकी वक्तव्य कला में एक अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था कि उनकी बात सहज रूप से समझ आ जाती थी वे अपने बात को इतने मार्मिक व् चित्ताकर्षक दंग से समझाते थे कि सामने वाला चाहे कितना भी विरोधी क्यों न हो उनकी बात का कायल हो जाता था।

जैन मुनि के रूप में उनकी चर्या क्रत्रिमता व् आडम्बर से दूर एक दम सहज थी। अनेक चौंकों की परम्परा उन्हें न पसंद थी वे कहते थे कि जब साधू एक समिति हो तो अनेक चौंकों की क्या आवश्यकता है। इससे न केवल अन्न का अपव्यय होता है बल्कि व्यक्ति को मानसिक वेदना भी होती है। अन्न के अपव्यय को वे राष्ट्रीय अपराध की श्रेणी में मानते थे। वे सदैव कहते थे कि जिस देश में आधी आबादी शाम को भूख पेट सोती है वहाँ एक साधू के पीछे अन्न का इतना अपव्यय क्यों।

मुनि जीवन में आचार्य श्री विद्यानंद जी ने प्राय: हर भाग की यात्रा कर जन – जीवन को जितनी बारिकी से देखा जाना और समझा है शायद ही किसी ने देखा होगा। आचार्य श्री अपने समय के पहले व एकमात्र संत हैं जिन्होनें हिमालय के साथ-साथ भगवान् आदिनाथ के पुण्य तीर्थ बद्री, विशाल, ऋषिकेश, हरिद्वार एवं केदारनाथ की यात्रा दिगम्बर वेश में की, वरना उससे पहले कोई भी दिगम्बर संत वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता था। यह आचार्य श्री के कालजयी व्यक्तित्व का

ही प्रभाव था कि आज दिगम्बर जैन संत सहज रूप से वहाँ भ्रमण कर सकते हैं। इस यात्रा में उन्हें हर स्थान पर सर्वोच्च सम्मान भी मिला। आचार्य श्री सिर्फ जैनों के नही अपितु जन-जन के संत थे देश भर में अनेक मस्जिदों, गुरुद्वारों व् गीता भवनों के साथ-साथ आर्य समाजों में भी उनके प्रवचन हुए। उनकी प्रवचन व् भाषा शैली इतनी सहज व् समग्र होती थी कि उनकी सभाओं में जैन से ज्यादा जैनेत्तर होते थे। यह केवल उनकी उदारता व् समग्र सोच का ही परिणाम था।

आचार्य श्री विद्यानंद जी अहिंसा को मात्र उपदेशों में नहीं बल्कि जीवन-दर्शन का हिस्सा मानते हैं। अहिंसा व् करुणा उनके रोम-रोम में समाहित थी।

आचार्य श्री सदैव सामाजिक एकता के पक्षधर रहे वे सदैव इसी प्रयास में लगे रहे कि जैन समाज के सभी पंथ व् संत एक मंच पर एकत्रित हों। भगवान् महावीर के २५०० वें निर्माण वर्ष के अवसर पर सभी संतों व् संघों के साथ-साथ सभी पंथों को एक मंच पर लाकर सामाजिक एकता का जो भागीरथी प्रयास किया वह अपने आप में अद्वितीय, अद्भुत व् अनुकरणीय था। उनका मानना था कि मत ठुकराओं, गले लगाओ धर्म सिखाओ, जैन समाज आचार्य श्री देशभूषण जी का ऋण कभी नहीं चुका सकता जिन्होनें आचार्य श्री विद्यानंद के रूप एक ऐसा नायब हीरा हमें दिया जिसने सुप्त पड़े जैन समाज क्रांति का विगुल फूंक दिया तथा एक नई पहचान दी।

इस बेला में स्वस्ति श्री चरुकीर्ती भट्टारक स्वामी जी (श्रवणबेलगोला) ने कहा कि 'आधुनिक जैन समाज में धर्म जागृति करने वालों में आचार्य श्री अग्रेय थे। जिनके द्वारा अनेकानेक धर्म प्रभावना कार्य करने के लिय प्रेणना मिली है।'

हम धन्य हैं कि हमारी पीढ़ी को इस युग के महान संत आचार्य श्री विद्यानंद जी के सुखिद सानिध्य व् मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धन्य हैं ऐसे युग प्रवर्तक आचार्य श्री जिन्होनें हमें जीने की नयी राह दिखायी। उनके चरणों में साष्टांग विनायांजली के साथ कोटि-कोटि नमन।

आत्मिक उजाले का पर्व है : दीपावली

दीपावली दीपमालिकाओं से सुसज्जित भगवान् महावीर का निर्वाण कल्याणक पर्व इस वर्ष २८ अक्टूबर २०१९ को आ रहा है। जगमग दीपों से प्रकाशित यह पर्व हमें उस क्षण की याद दिलाता है जब भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या की पावन तिथि को स्वाति नक्षत्र में प्रातः क़ाल के समय पावापुर के मनोहर वन में अनेक सरोवरों के बीच एक शिला पट्ट पर विराजमान होकर ७२ वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को त्यागकर मोक्ष पद प्राप्त किया था।

उनके मोक्ष जाने के पश्चात समस्त जाति के देव, सौधर्मइंद्र, देवियों अपने-अपने प्रथक चिन्हों से युक्त होकर आये तथा नृत्य-गीत एवं एश्वर्यपूर्व महोत्सव मानकर प्रभु की पूजा की। जिस उपवन में प्रभु को निर्वाण प्राप्त हुआ था वहाँ श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद इंद्र ने निर्वाण साधक प्रभु के शरीर को अत्यंत रलोज्ज्वल एवं स्वर्ण निर्मित पाल की में रखा। बाद में अनेक सुगन्धित द्रव्यों को लगाया। फिर अग्नि कुमार देव के मुकुट के दिव्य अग्नि से प्रभु का शरीर जलाया। प्रभु के शरीर की सुगंध सम्पूर्ण दिशाओं में फैल गयी। अंत में इंद्र के साथ सभी देवों ने प्रभु की चिताभस्म को अपने-अपने हाथों में लेकर अपनी अपनी शीघ्र मोक्ष प्राप्ति की कामनाएं की। फिर उस चिताभस्म को क्रमशः मस्तक, बांह, नेत्र एवं सम्पूर्ण शरीर में सब लोगों ने लगाया।

भगवान् महावीर के निर्वाण के समय श्रावक और श्राविकाएं शोक के कारण रों रहे थे और राक्षस गीत गा रहे थे। साधू और साध्वियां भी शोकाकुल थे। उसी दिन अमावस्या की रात्री को इंद्रभूत गणधर को भी केवलज्ञान प्राप्त हुआ। भगवान् महावीर के निर्वाण गमन और गौतम गणधर के केवलज्ञान से प्रसन्न होकर देवतागणों ने पावापुर वन में रत्नदीप संजोकर ऐसा दीप जलाया कि जिसके प्रकाश से आभास होने लगा कि कहीं यह दूसरा अमरलोक तो नही है। उस समय पूरा का पूरा नभमंडल और पृथ्वीलोक दीपों से जगमगा रहा था। उस समय से आज तक भारतवर्ष की पावन धरा पर भगवान् महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में दीपावली मनाई जाने लगी।

जहाँ तक शास्त्रों और पुराणों के आधार का सम्बन्ध है, तो वह है सबसे प्राचीन ग्रंथ आचार्य जिनसेन जी द्वारा लिखित 'हरिवंश पुराण' जिसकी रचना शक संवत ७०५ में हुई थी। ग्रंथ में लिखा है कि भगवान् महावीर का निर्वाण होने पर कार्तिक अमावस्या के दिन उनकी निर्वाण भूमि पावापुरी में दीपमालिका उत्सव मनाया गया और देवताओं रजा तथा प्रजा ने महावीर भगवान् की आरती और पूजा की। उसी तिथि पर प्रतिवर्ष इस उत्सव को मनाने की प्रथा चल पड़ी।

दीपावली का प्रकाश पर्व पुन: हम सबके बीच आने का दस्तक दे रहा है। यह हमें समझाने का प्रयत्न भी कर रहा है कि अपने भीतर के अमावस्या रुपी अन्धकार को मिटाने के लिय हम सभी को एक छोटे से ज्ञान रुपी दीपक की आवश्यकता है, यह हमें यह भी बताना चाहता है कि अपने घरों के प्रदुषण को दूर करने के साथ साथ आत्मा के प्रदुषण को भी दूर करो, साथ ही यह परम पवित्र पर्व यह भी निवेदन करता है कि वह हमारे नाम पर किसी भी तरह के गलत परम्परा को बढ़ावा मत दो।

यदि दीपावली की महत्ता पर विचार करे तो यह भारतवर्ष का पहला पर्व है जिसका आदर लगभग सभी धर्मों में है। सभी धर्मानुयायी इसे प्रेम, उत्साह और भाई-चारे के साथ-साथ अपने –अपने धार्मिक मान्यतानुसार मनाते है। जैन धर्म के अतिरिक्त हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म, आर्य सम्माज धर्म एवं ईसाई धर्म में इसे मनाने की अपनी अपनी परम्पराएं हैं।

हिन्दू धर्म में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र जी का दशहरे के दिन रावन का वध करना और दीपावली के दिन अयोध्या वापस आना, इसी दिन श्री कृष्ण द्वारा नरकासुर का वध करना और इसी दिन भगवती दुर्गा जी का अपने पति के गृह जाना दीपावली मनाने का प्रमुख कारण है। सिक्ख धर्म में सिक्खों के छठे गुरु श्री हरिगोविन्द सिंह जी का मुगल बादशाह की कैद से छूटना दीपावली मनाने का कारण है और आर्य समाज में दीपावली के दिन ही स्वामी दयानंद सरस्वती तथा रामकृष्ण परमहंस का निर्वाण होना दीपावली मनाने का कारण है। इसके अतिरिक्त व्यापारी नया वर्ष आरंभ करने के अभिप्राय से दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश की पूजा करके दीप जलाते हैं।

भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी यह पर्व विभिन्न नामों से जाना जाता है। वमो में इस पर्व को 'तैगीष' कहा जाता है और वहाँ प्रकाश पर्व के रूप में इसे मनाया जाता है।

नेपाल में इसे 'तिहार' के नाम से मनाते है। तिहार पंच दिवसीय मनाया जाता है, इन दिनों भक्तगण विशेषत: शंकर जी की पूजा करते हैं। चीन में इस त्यौहार को 'नेई महुआ' के नाम से मनाते है। आमोद-प्रमोद पूर्वक इस पर्व को मनाकर वे नया वर्ष शुरू करते हैं। फिजी देश में मशाल जुलुश निकालकर इस पर्व को मनाते हैं। तिब्बत में इस पर्व को 'लाओस' कहते हैं। मशाल और दीप जलाए जाते हैं। सामूहिक नाच-गान के साथ इसे सम्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे बहुत से देश है, जहाँ इस पर्व की धूम रहती है। इस तरह से दीपावली एक अंतर्राष्ट्रीय पर्व की उपमा से विभूषित होता है।

आइये दीपावली के इस परम पावन पर्व पर भगवान् महावीर के पुण्य स्मृति में आत्म दीपक से विषय-कषायों को जलाकर राख कर दें, कुरीतियों और कुप्रथाओं को दूर करें और सच्चे अर्थों में ज्ञान के उज्जवल प्रकाश में खुद को निहारें। भगवान महावीर ने कहा है कि 'इस पवित्र पर्व पर आत्मा को गहराई में उतर के देखो, एक दीपक वहाँ भी है, उसे प्रकाशित करों, यह दीपक महावीर नाम के जपने से नही, बल्कि उसमें डूबने से जलेगा और यदि यह जल गया तो मोक्ष का पथ आसानी से दिख सकेगा'।

- ध्रुव कुमार जैन
प्रतापगढ़ उ.प्र.

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के स्मारक

-पं. कोमलचन्द्र जैन, शास्त्री (खड़ेरी)

भारत कृषि प्रधान के साथ-साथ अध्यात्म प्रधान देश है। यहाँ दर्शन, भाषा, साहित्य, ललित कलाएँ, लोक जीवन आदि सभी आध्यात्मिकता में समाहित हैं। भारत में सभ्यता के साथ आदिकाल से धार्मिक भावनाएँ किसी न किसी रूप में विद्यमान रही हैं। धार्मिक भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए मन्दिर और मूर्ति का निर्माण हुआ। मंदिर, मूर्तियां एवं चरण चिन्ह केवल पूजा के स्थान न हो करके ऐतिहासिक अन्वेषण में बहुत सहयोगी भी हैं।

जैनधर्म भारत के विविध भागों में बहुत प्राचीन काल से प्रचलित रहा है। अनेक कला केन्द्र आज भी इसके प्रमाण हैं। अनेक स्थानों पर प्राचीन जैन संस्कृति और कला आज भी प्राप्त होती है एवं वर्तमान में भी अनेक आचार्यों तथा मुनियों के माध्यम से जैन कला एवं संस्कृति का उत्कृष्ट विकास हो रहा है; जो आने वाले समय में जैन कला एवं संस्कृति के लिए एक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के सर्वेक्षण के माध्यम से ज्ञात होता है कि जैन धर्म में जैन तीर्थंकरों, आचार्यों, साधुओं, यक्ष-यक्षिणियों, क्षेत्रपालों, पद्मावती देवियों की मूर्तियों का उल्लेख मिलता है। जिससे हम जान सकते हैं कि प्राचीन मूर्ति सम्पदा हमारी धरोहर है। उस धरोहर को सुरक्षित रखना हमारा विशेष कर्त्तव्य है। हमें अपनी ऐतिहासिक धरोहर से अपने देश, संस्कृति एवं भाषा का ज्ञान होता है। साथ-साथ हमारा धर्म कितना प्राचीन है; इसका भी पता चलता है।

हमारे देश में तीर्थंकरों की मूर्ति के साथ-साथ ऋषि-मुनियों की मूर्ति प्राचीन काल से ही बनाई जा रही हैं। तब भी कुछ लोगों का कहना है कि आचार्यों, साधुओं एवं गुरु की मूर्ति स्थापित क्यों? भगवान् की मूर्तियां स्थापित होनी चाहिए। आप आश्चर्य करेंगे कि अनेक जैन आचार्य, उपाध्याय तथा मुनि एवं आर्यिका माताओं की मूर्ति प्राचीन काल से ही निर्मित हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि अनेक ग्रन्थों में आचार्यों एवं साधुओं की मूर्ति स्थापित होने का उल्लेख मिलता है और वर्तमान में अनेकों जगह प्राचीन आचार्यों की मूर्तियां एवं चरण चिन्ह मिलते हैं।

जैन प्रतिमा विज्ञान पुस्तक में श्री मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी ने उल्लेख किया है कि ''जैन देवकुल के पंच परमेष्ठियों में अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु सम्मिलित थे। पंच परमेष्ठियों में से प्रथम दो मुक्त आत्माएं हैं, जिनमें अर्हत् शरीर युक्त और सिद्ध निराकार हैं। तीर्थों की स्थापना कर कुछ अर्हत् तीर्थंकर कहलाते हैं। पंच परमेष्ठियों के पूजन की परम्परा प्राचीन है। परवर्ती युग में सिद्धचक्र या नवदेवता के रूप में पूजन की धारणा विकसित हुई। पंच परमेष्ठी में आचार्य, उपाध्याय एवं साधु की मूर्तियाँ (१०वीं १२वीं शती ई.) विमलवसही लूणवसही, कुमारिया, ओसिया (देवकुलिका) देवगढ़, खजुराहो एवं ग्वालियर से प्राप्त होती हैं। (जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ. ५०)

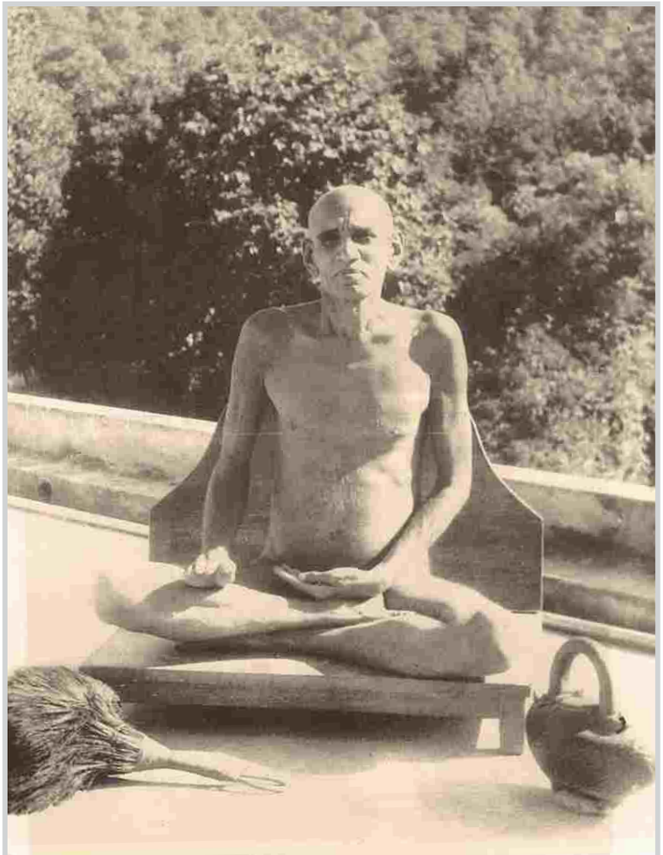

आचार्यश्री आशीर्वाद मुद्रा में (सन् १९६९, सम्मेदशिखरजी)।

खजुराहो के मन्दिर अपनी वास्तुकला एवं शिल्प वैभव के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर चन्देल शासकों के काल में कई जैन मन्दिर थे। ''यहाँ पर तीन प्राचीन और ३२ नवीन जैन मन्दिर हैं। वर्तमान में पार्श्वनाथ और आदिनाथ मन्दिर ही पूर्णत: सुरक्षित है। खजुराहो की शिल्प सामग्री दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बद्ध है और उसकी समय सीमा लगभग ९५० ई. से ११५० ई. तक है। चन्देल शासकों द्वारा बनवाये गये जैन मंदिरों पर मोर पिच्छी लिये कुछ नग्न मुद्रा में मूर्तियाँ अंकित हैं जो जैनाचार्यों की हैं। 'घण्टई मन्दिर' की छतों और स्तम्भों पर जिनों (तीर्थंकरों) एवं जैनाचार्यों की लघु मूर्तियाँ हैं'' (जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ.-७४)

खजुराहो के प्राचीन जैन मन्दिरों के अतिरिक्त स्थानीय संग्रहालयों एवं नवीन जैन मन्दिरों में भी मूर्तियां सुरक्षित हैं। ''यहाँ पर जैन आचार्यों की कई मूर्तियाँ हैं। (जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ.-७५)

देवगढ़ उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित है। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण मध्ययुगीन जैनतीर्थ स्थल है। यहाँ से आठवीं से बारहवीं शती ई. के मध्य की प्रचुर सामग्री मिली है; जिसमें यहाँ जैन

आचार्यों का चित्रण विशेष था। स्थापना के समीप विराजमान जैन साधु की दाहिनी भुजा से व्याख्यान मुद्रा व्यक्त है और बायीं में पुस्तक है।'' इस से यह प्रतीत होता है कि यह उपाध्याय परमेष्ठी की मूर्ति है। यहाँ की द्वार शाखाओं पर मयूर पिच्छिका से युक्त अनेक जैन आचार्यों एवं मुनियों की प्रतिमाओं का चित्रण है'' (जैन प्रतिमा विज्ञान)।

'देवगढ़ की कला' नामक पुस्तक में उल्लेख मिलता है कि ''साधु-साध्वियों को मूर्तरूप देने का विधान जैन प्रतिमा शास्त्रों में नहीं मिलता। उनकी चरणपादुकाओं और ''निसई'' (निषीधिका) के निर्माण का विधान अवश्य है'' (आशाधर कृत प्रतिष्ठापाठ, श्लोक १०५) लेकिन देवगढ़ की कला एवं कलाकार के समक्ष तो शास्त्रीय विधान से बढ़कर भक्ति का उद्रेक था। उसकी छैनी जब चलती थी तब भक्ति की अथाह और अटूट गंगा बहा देती थी, उसकी राह में परम्पराओं एवं शास्त्रीय विधानों के छोटे-मोटे पर्वत क्या? तभी तो वह भरत-बाहुवली की महान् प्रेरक मूर्तियाँ गढ़ता है। आचार्य महाराज को उपदेशरत दिखाता है। अध्यापन में संलग्न उपाध्याय परमेष्ठी को अंकित करता है ('देवगढ़ की कला' से)।

चम्पापुर में आचार्य महावीरकीर्ति जी के प्रथम शिष्य आचार्य विमलसागर जी के काले पाषाण के चरण विराजमान हैं। अनेक आचार्य जैसे कुन्दकुन्द, अमृतचन्द्र, उमास्वामी आदि की मूर्तियाँ बनी हैं। (इन्द्रप्रस्थ से मुक्तिधाम, पृ.-१४५)

''आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी की प्रतिमा चूलगिरी (बावनगजा) में पीछी-कमंडलु सहित है। आचार्य माणिकनंदी की प्रतिमा आकोट में, आचार्य कनकनंदी की प्रतिमा देवगढ़ में, आचार्य अंकलक देव की प्रतिमा करन्दै में, धरसेनाचार्य से लेकर समंतभद्र तक अनेक आचार्य के चरण चिन्ह सूरत-कतारगाँव में हैं एवं अनेकों जगह मूर्तियां भी विराजमान हैं।

आचार्य शांतिसागर की प्रतिमाएं धनुपुरा बालविश्राम आरा, पावापुर सिद्धक्षेत्र, कुंथलगिरी, भेड़ाघाट, कुंभोज (बाहुबली), शेडवाल, उदयपुर, अशोकनगर, गोम्मटगिरी (इंदौर), स्तवनिधि छात्रावास (कर्नाटक, लाड़नूं, पोदनपुर (बंबई) में विराजमान हैं।

आचार्य, वीरसागर जी महाराज की प्रतिमा जयपुर खानियां में, आचार्य श्री देशभूषण जी की जयपुर-चूलगिरी में, आ. अजितसागर जी की प्रतिमा अणिन्दा-पार्श्वनाथ में, पीछी-कमण्डलु-माला लिए हुए सैकड़ों दि. मूर्तियाँ मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में मांगी पर्वत की गुफा में हैं, जिनमें बलभद्र स्वामी की मूर्ति विशेष दर्शनीय है। जयसिंहपुरा, उज्जैन में हाथ में माला लिए दो प्रतिमाएँ हैं।'' ('विजयी भव' पुस्तक से- शीर्षक ''आचार्यों, मुनियों की प्रतिमाएँ)।

इस प्रकार हम देखें कि प्राचीन काल से ही भारत में जैन आचार्यों की मूर्ति एवं चरण चिन्ह स्थापित होते आ रहे हैं। आज के समय में कोई कहे कि आचार्यों एवं साधुओं की मूर्ति एवं चरण चिन्ह स्थापित करना ठीक नहीं हैं; तो पहले अनेकों जगह जो मूर्तियां स्थापित हुई हैं तो वह भी ठीक नहीं है; ऐसा मानना पड़ेगा। मगर मेरा कहना है कि जब प्राचीन काल में आचार्यों की मूर्तियां स्थापित हुईं तो वर्तमान में आचार्यों की मूर्तियां स्थापित हों तो कोई बुरी बात नहीं है, और आचार्यों की मूर्तियां स्थापित होना चाहिए। क्योंकि जब हमें आचार्य परमेष्ठी पूज्य हैं तो उनकी मूर्तियां एवं चरण चिन्ह भी पूज्य हैं।

भारत के विविध स्थानों में बीसवीं शती के आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज जी के साथ-साथ वात्सल्य रत्नाकर श्री विमलसागर जी की मूर्तियाँ एवं चारणपादुकाएं प्राप्त होती हैं; जो विशेष रूप से आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज के तृतीय पट्टाधीश तपस्वी सम्राट् आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा स्थापित की गईं एवं अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं आदि के द्वारा भी आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज, आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी, आचार्य श्री विमलसागर जी की मूर्तियां स्थापित कराई गई हैं; जिसका उल्लेख अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं ने अपनी पुस्तकों में किया है।

(अ) आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी द्वारा लिखित अनूठा तपस्वी, यात्रा के संस्मरण, मौन तपस्वी आदि पुस्तकों में उल्लेख मिलता है कि तपस्वी सम्राट् आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भारत देश की चारों दिशाओं के अनेकों नगरों एवं क्षेत्रों पर परम पूज्य आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज की मूर्तियाँ एवं चरणपादुकाएं विराजमान की गयीं जो हमें आज भी प्रेरणादायी हैं। जिनका उल्लेख इस प्रकार है-

टूण्डला- उत्तरप्रदेश में स्थित है। एत्मादपुर से विहार कर संघ टूण्डला पहुँचा। यहाँ के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में २६ मई १९९६ को आचार्य संघ के सान्निध्य में आचार्य आदिसागर (अंकलीकर) की प्रतिमा एवं चरण चिन्ह विराजमान की गई।'' (अनूठा तपस्वी, पृ. १३४)

मरसलगंज- आचार्य संघ विहार करता टूण्डला से फरिहा होते हुये मरसलगंज पहुँचा; जहाँ पर २ जून १९९६ को आचार्य आदिसागर, आ. महावीरकीर्ति, आ. विमलसागर जी महाराज की मूर्ति विराजमान की गई थी। (अनूठा तपस्वी, पृ. १३४)

फिरोजाबाद- आचार्य श्री एवं संघ ने सुहागनगरी फिरोजाबाद में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही कुएँ में पानी आ गया। फिर रोज पानी कितना भी निकाला गया, कुआँ खाली नहीं हुआ।

प्रारंभ में यहाँ श्रावक आचार्यश्री आदिसागर जी को प्राथमिकता नहीं देते थे, जबकि यहाँ के मुनि महावीरकीर्ति को आचार्य आदिसागर अंकलीकर ने अपना पट्टाधीश बनाया था। इन गुरु-शिष्य की एक पुरानी प्रतिमा भी वहाँ के मन्दिर में है। इस आशय का एक छंद आचार्य महावीरकीर्ति की पूजा में पं. श्यामसुंदर शास्त्री ने

१९५६ में उनके चातुर्मास के अवसर पर लिखा था। धीरे-धीरे लोग इस बात को स्वीकारने लगे और आचार्य आदिसागर को इस शताब्दी के महान आचार्यों के रूप में मानने लगे (अनूठा तपस्वी, पृ.१३५)।

सोनागिर- एक सिद्ध क्षेत्र है। आचार्य श्री भिण्ड से विहार कर संघ सहित सिद्ध क्षेत्र सोनागिर पहुँचे। यहाँ विराजित आर्यिका गणिनी विजयमति माता जी ने भक्ति पूर्वक दूर से संघ की अगवानी की। हठाग्रहों से दूर आचार्यश्री ने प्रवास हेतु तेरापंथी कोठी को चुना। स्वर्णगिरि अथवा श्रमणगिरि अपर नाम वाले इस सिद्धक्षेत्र से नंग-अनंगकुमार आदि साढ़े पाँच कोटि मुनि मोक्ष पधारे हैं। सरल चढ़ाई वाले पर्वत पर ७७ जिनालय और १३३ छतरियाँ स्थित हैं। चंद्रप्रभ भगवान् की प्रतिमा प्राचीन व मनमोहक है। नंग-अनंगकुमार के प्राचीन चरण-चिन्ह भी दर्शनीय हैं। इस सुरम्य तीर्थ पर स्थित नारियल कुंड और बजने वाली शिला भी अनेक किंवदंतियाँ लिए हुए है। यहाँ आचार्य श्री का ५९वाँ जन्म जयंती दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर माताजी की प्रेरणा से बीसपंथी मन्दिर में आचार्य श्री आदिसागर जी, आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी एवं आचार्य श्री विमलसागर जी की प्रतिमाएँ विराजमान की गईं (अनूठा तपस्वी, पृ. १३७)।

प्रतापगढ़ में आचार्यश्री शांतिसागर जी की मूर्ति निर्मित है।

नरवाली- (राजस्थान) में भी विविध कार्यक्रमों के मध्य आचार्य गुरुदेव श्री सन्मतिसागर जी ने ससंघ आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी २३ जुलाई २००२ को विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में चातुर्मास स्थापित किया। चातुर्मास कलश स्थापना राजमल जी बगोरिया परिवार ने की।

नरवाली में श्रावण कृष्ण तीज दिनांक २७.७.२००२ को वेदी का शिलान्यास किया गया। वेदी निर्माण का कार्य तेज गति से चलने लगा और थोड़े ही दिनों में एक सुन्दर वेदी तैयार हो गई। इस वेदी का निर्माण भले ही अल्प समय में हुआ; पर हुआ अच्छा ही। सफेद मार्बल पत्थर की वेदी में अष्ट प्रातिहार्य का भी चित्रण किया गया और विभिन्न रंगरोगनों से सजाया गया।

वेदी में आचार्य श्री आदिसागर जी (अंकलीकर), आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी एवं आचार्य श्री विमलसागरजी की प्रतिमायें बड़े ही हर्षोल्लास के साथ विराजमान की गईं।'' (यात्रा के संस्मरण, पृ. १६६)। अभी कुछ समय पहले यहाँ पर चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य सुनील सागर जी महाराज के आशीर्वाद से तपस्वी सम्राट् आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज की मूर्ति स्थापित की गई। जिसकी स्थापना में आचार्य शान्तिसागर जी णमोकार वाले महाराज का सान्निध्य रहा।

पार्श्वगिरी- बावनगजा और बड़वानी के मध्य स्थित सुरम्य पहाड़ियों के बीच नव विकसित क्षेत्र पार्श्वगिरी में प्रवेश हेतु विशाल जन समुदाय के साथ मुनि श्री सुनीलसागर जी (वर्तमान में आचार्य हैं) एवं आचार्य सिद्धान्तसागर जी (वर्तमान में आचार्य हैं) ने आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज की अगवानी की। आचार्य श्री के साथ बालाचार्य योगीन्द्र सागर जी एवं गणिनी आ. विजयमति माता जी ससंघ थीं। पहाड़ पर सुंदर सात मंदिरों का निर्माण हो चुका है, जिसमें पंचबालयति मंदिर, नवग्रह मंदिर, सप्त ऋषि मन्दिर और गुरु मन्दिर की तो प्रतिष्ठा भी हो चुकी है। गुरु मन्दिर में श्री इन्द्रजीत, मेघनाथ और कुंभकर्ण के साथ-साथ आचार्य श्री आदिसागर जी की प्रतिमा विराजमान है।'' (यात्रा के संस्मरण, पृ. ११३८)

द्रोणगिरि- श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी का लघु सम्मेद शिखर जी बड़ा ही सुरम्य क्षेत्र है। बड़ा मलहरा से ५ किलोमीटर दूर स्थित क्षेत्र द्रोणगिरी-सागर-दमोह-टीकमगढ़-छतरपुर के मार्ग के मध्य में स्थित है। यहाँ से गुरुदत्तादि मुनिराज मुक्तिपुरी को प्राप्त हुए। यहाँ मात्र द्वि दिवसीय प्रवास में आचार्य श्री ने सामायिक पर्वत पर ही की। पर्वत पर आचार्यश्री कुन्दकुन्द, आ. श्री आदिसागरजी, आ. शान्तिसागर जी, आ. श्री महावीरकीर्ति जी आदि समाधिस्थ आचार्यों के चरण चिन्ह भी विराजमान हैं।'' (यात्रा के संस्मरण, पृ. १९५)

झोटवाड़ा- जयपुर (राजस्थान) में २५ फरवरी १९९५ को आचार्य संघ अमरचन्द दीवान के प्राचीन मन्दिर से झोटवाड़ा कालोनी पहुँचे। यहाँ पर नवनिर्मित श्री १००८ चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर में २५ से २७ फरवरी को गणधर वलय विधान के समय आचार्य श्री आदिसागर जी की मनोहारी मूर्ति स्थापित की गई थी। इस अवसर पर आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर का समाधि दिवस मनाया गया जिसमें अनेक विद्वानों ने श्रद्धांजलि प्रस्तुत कीं। (अनूठा तपस्वी, पृ. १२४)

वाराणसी- प्राचीन काल में इस नगर को काशी के नाम से जाना जाता था। यह भगवान् सुपार्श्वनाथ जी तथा पार्श्वनाथ भगवान् की जन्म भूमि है। यहाँ पर आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ने चातुर्मास भी किया था। भेलूपुर स्थित पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर से ५० या ६० कदम की दूरी पर एक खड्गसेन उदयराज जैन मन्दिर है। इस मन्दिर में आचार्य श्री के सानिध्य में आ. आदिसागर जी, आ. महावीरकीर्ति जी, आ. विमलसागरजी की मूर्ति स्थापित की गई थी।

उज्जैन का मतलब ही यह है कि जहाँ जैनों का उत्कर्ष रहा हो। जैन साहित्य अपरिमित है। उपलब्ध जैन एवं अजैन साहित्य में चाहे वह भारत की किसी भी भाषा का हो उज्जैन नगर का उल्लेख अवश्य है। जैन शिलालेखों में उज्जैन जगह-जगह उत्कीर्णित है। मैसूर राज्य के श्रवणबेलगोल नामक प्रसिद्ध तीर्थ के चन्द्रगिरि पर्वत पर शक संवत् ५२२ का एक शिलालेख है जिसमें आचार्य भद्रबाहु स्वामी को उज्जैन स्थित बतलाया है। इस नगरी का सम्बंध प्रारम्भ से ही महापुरुषों से रहा है। इसी पवित्र पावन भूमि पर आ. सन्मतिसागर जी महाराज का प्रवास हुआ। जिसमें इन्द्रानगर कालोनी स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आचार्य श्री के ससंघ सानिध्य में पंडित संतोष कुमार जी द्वारा संपन्न हुई थी एवं साथ में

निकटस्थ तीर्थक्षेत्र जयसिंहपुरा में आचार्य आदिसागरजी (अंकलीकर) के चरण चिन्ह संघ के सानिध्य में स्थापित किये गये थे। लक्ष्मी कालोनी स्थित श्री दि. जैन मन्दिर (बीसपंथी) में आ. श्री आदिसागरजी, आ. श्री महावीरकीर्ति जी, आ. विमलसागरजी महाराज की प्रतिमा विराजमान की गईं।

खमेरा- जिला बाँसवाड़ा राज. में आ. आदिसागरजी महाराज के चरण एवं आचार्य त्रय की मूर्ति आ. श्री सन्मतिसागरजी महाराज के सानिध्य में स्थापित की गई थी।

आरा- संघ विहार करता हुआ आरा के धनुपुरा स्थित श्री जैन बालाविश्राम पहुँचा। इस नगरी में आचार्य श्री पहले भी दो बार आ चुके हैं। यहाँ पर आचार्य महावीरकीर्ति महाराज ने भी लगभग तीस वर्ष पूर्व प्रवास किया था। यह नगरी पू.ग. आर्यिका विजयामति माताजी की शिक्षास्थली है। इस नगरी में आचार्य आदिसागरजी (अंकलीकर) जब गृहस्थावस्था में ब्रह्मचारी थे तब यात्रा करने आए थे। उस समय यहाँ पर ३३ मन्दिर थे। इसी पावन धरा पर आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी के ४६वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में चरण विराजमान हुए और ऋषिमण्डल विधान के अवसर पर सात मार्च को भगवान् चन्द्रप्रभ के मन्दिर में आचार्य आदिसागरजी (अंकलीकर) आ. महावीरकीर्ति, आ. विमलसागरजी की प्रतिमा विराजमान हुईं।

शिकोहाबाद - टूण्डला से विहार कर संघ शिकोहाबाद के श्री दि. जैन मन्दिर, गोविन्द कम्पाउन्ड में आ पहुँचा। यहाँ पर भ. महावीर स्वामी की मूलनायक मूर्ति विराजमान है। यहीं पर आचार्य श्री ने आषाढ़ शुक्ल एकम् १६ जुलाई १९९६ को पहाड़ी धीरज, दिल्ली के लड़के ब्र.प्रदीप को मुनि दीक्षा देने की घोषणा कर दी थी और कुछ समय बाद आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ने सम्पूर्ण संघ के पावन सानिध्य में मुनि दीक्षा देकर कृतार्थ कर दिया। इस अवसर पर मुनि श्री अमितसागर जी भी विराजमान थे जिनके सान्निध्य में आचार्य श्री आदिसागर (अंकलीकर), आ. महावीरकीर्तिजी, आ. विमलसागरजी महाराज के चरण विराजमान हुये।

सकरार- यहाँ पर आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज का त्रिपाक्षिक प्रवास किया। इस बीच यहाँ अनेक धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुये थे। यहाँ पर टूण्डला के श्री महेश कुमार जैन ने चौबीस एवं त्रय आचार्यों की मूर्तियाँ गुरुवर से प्रतिष्ठापित कराई थीं।

गुलजारबाग-पटना- आचार्य सन्मतिसागरजी महाराज के विशाल ससंघ के सानिध्य में आचार्य महावीरकीर्ति महाराज जी के २७वें समाधि दिवस के उपलक्ष्य में ८ जनवरी १९९९ को आचार्य आदिसागर जी एवं उनके पट्टाधीश महावीरकीर्ति जी महाराज के चरण विराजमान किये गये।

करगुवां जी- झांसी, आचार्य श्री आदिसागरजी के चरण स्थापित हैं जो आचार्य श्री सन्मतिसागर महाराज जी के ससंघ ५५ पिच्छी के सानिध्य में सन् १९९८ में विराजमान किये गये थे।

बड़ा मलहरा (छतरपुर)- २४ फरवरी १९९८ को आचार्य आदिसागर जी के ५५वें समाधि दिवस के अवसर पर विराजमान किये गये थे। इस अवसर पर विधायक कपूरचन्द जी घुवारा ने आ. आदिसागरजी (अंकलीकर) पाठशाला संचालित करने की घोषणा भी की थी।

पाटन सूरजपुर मन्दिर देवघर में आचार्य महावीरकीर्ति महाराज का शास्त्रार्थ ब्राह्मणों से हुआ जिसमें विजय प्राप्त की थी। इस पावन पवित्र भूमि पर आ. श्री सन्मतिसागर जी ने आ. श्री महावीरकीर्ति जी के गुरु आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज के चरण चिन्ह ८ जुलाई १९९८ को स्थापित किये थे।

एत्मादपुर - आ. श्री सन्मतिसागरजी महाराज का आगरा से विहार कर एत्मादपुर ससंघ आगमन हुआ, जहाँ आचार्यश्री दि. जैन धर्मशाला में रुके। यहाँ की समाज बहुत छोटी थी लेकिन मुनिभक्त थी। यहाँ की समाज दो भागों में विभक्त थी। एक मुनिभक्त थी तो दूसरी मुनियों की निन्दा करती थी लेकिन आ. श्री की तपस्या देखकर वे सब मुनिनिन्दक मुनिभक्त बन गये। यहाँ पर आचार्य आदिसागरजी महाराज का ८२वाँ आचार्य पदारोहण का कार्यक्रम आ. श्री सन्मतिसागरजी के सान्निध में समस्त जैन समाज ने बड़ी भक्ति भावना के साथ त्रिमूर्ति मन्दिर में मनाया। श्रुतपंचमी के अवसर पर आचार्य आदिसागर जी महाराज की श्वेत पाषाण की पद्मासन मूर्ति विराजमान की गई। यह मूर्ति मनोहारी है।

सम्मेदशिखर जी- यह २०तीर्थंकर भगवान् की निर्वाण भूमि है। इस पवित्र भूमि पर आचार्य श्री आदिसागर जी, आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी, आ.श्री विमलसागर जी की मूर्ति आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के विशाल संघ के सानिध्य में स्थापित हुई थी। उस समय आचार्य भरतसागर जी आदि अनेक आचार्य उपस्थित थे।

'विजयीभव' पुस्तक में गणिनी आर्यिका विजयमति माताजी ने लिखा है-आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर की प्रतिमा अजितनाथ दिगम्बर जैन मंदिर उदयपुर में, ऊमरी भिण्ड में, झोटवाड़ा-जयपुर में, मूड़बिद्री में, अंकली में, गांधी मन्दिर, सागवाड़ा में, तीनमूर्ति एत्मादपुर में, चौकीगेट- मुहल्ला लोहियान-देवनगर फीरोजाबाद में है। आ. आदिसागरजी अंकलीकर, आचार्य महावीरकीर्ति, आचार्य विमलसागर की प्रतिमाएँ मरसलगंज में, लक्ष्मीनगर-उज्जैन में, गुनौर में, आरा में, बनारस में, सन्मतिसाधना सदन, शिखर जी में, तीस चौबीसी मन्दिर, शिखर जी में, आचार्य महावीर कीर्ति की प्रतिमा बीसपंथी कोठी की बगीची मधुबन में आदि अनेक जगह पर आचार्य भगवन् आदिसागर जी अंकलीकर की मूर्तियां एवं चरण चिन्ह विराजमान होने का उल्लेख है।

शाकाहार ही सर्वश्रेष्ठ आहार है: मुनिश्री प्रभातसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने विशाल धर्मसभा में 'शाकाहार' के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि मनुष्य करुणाशील है, उदार हृदय है लेकिन दुभाग्य से आज उसकी करुणा धीरे-धीरे खोती जा रही है और वह तेजी से हिंसा की दिशा में प्रवृत्त होता जा रहा है। मांसाहार एक तामसिक आहार है। मांसाहार से मनुष्य क्रूर, करुणाहीन, हिंसक, कामी, क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है। जीव हत्या और मांस सेवन एक जघन्य अपराध है, महापाप है। भारतीय संस्कृति और मानवीय सभ्यता का एक ही आधार है शाकाहार।

मुनिश्री ने कहा कि सभी धर्म ग्रंथों में शाकाहार को सर्वोत्तम आहार माना गया है। वैज्ञानिक परीक्षणों और निष्कर्मों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार अधिक उत्तम, पौष्टिक, सुपाच्य और स्वास्थ्यप्रद होता है। शाकाहार न सिर्फ शरीर को निरोग रखता है बल्कि जीवन को भी श्रेष्ठ बनाता है। शाकाहार से मन और बुद्धि निर्मल व पवित्र बनते हैं। जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन उक्ति के अनुसार आहार का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शुद्ध व सात्विक आहार विचार व व्यवहार को भी शुद्ध रखते हैं। शाकाहार शील, सदाचार और सहृदयता का जनक होता है जबकि मांसाहार मनुष्य को हिंसक बनाता है।

मुनिश्री ने कहा कि अपना पेट भरने के लिए किसी बेकसूर प्राणी का पेट काटना सबसे बड़ा पाप है। धन के लालच में किसी के प्राणों से खेलना जघन्य अपराध है। पशुओं को काटा जाना देश के हित में नहीं है। यदि कोई व्यक्ति पशु का मांस खाता है तो वह सिर्फ मांस ही नहीं खाता है, पशु के संस्कार भी खाता है। मांसाहार ने मनुष्यों को पशु-सा बना दिया है। यही कारण है कि कुछ लोग मनुष्य होकर भी पशु जैसा आचरण करने

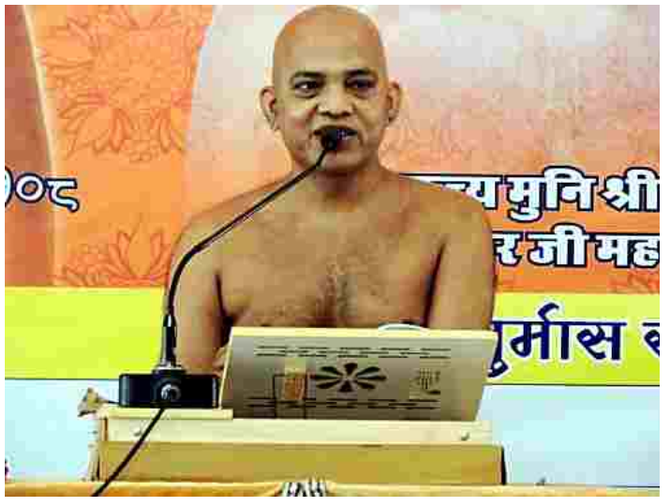

लगे हैं।

मुनिश्री ने कहा कि मांसाहार मानव जाति के हित में नहीं है, मनुष्य का प्राकृतिक आहार शाकाहार है। शाकाहार से ही मनुष्य अपने धर्म और संस्कृति को आत्मसात कर सकता है। बूचड़खानों और मांस निर्यात की नीति ने भारत की प्रतिष्ठा, अस्मिता व मूल्यों को तहस-नहस कर दिया है। हिंसा के कदम तेजी से बढ़ रहे हैं। बढ़ती हुई हिंसा को यदि समय रहते नहीं रोका गया तो एक दिन दूर नहीं जब आदमी का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर का अमर संदेष 'जीओ और जीने दो' सारी दुनिया में पहुंचाना है। अपने दुख से दुखी होकर हर कोई आंसू बहा लेता है लेकिन दूसरों की पीड़ाओं को देखकर जिसकी आंखें छलछला उठती हैं वही सच्चा इंसान है।

बेहतर दिखने नहीं, बेहतर बनने का करें प्रयास: मुनिश्री अभयसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री अभयसागर महाराज ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि व्यावहारिक सोच में जीने वाले लोग बहुत हिसाब किताब से जीते हैं। वे हर चीज को संभाल कर चलते हैं कि हमारे व्यवहार का सामने वाले पर कोई बुरा असर न पड़े, वे अच्छा दिखना चाहते हैं। यह बात अलग है कि अच्छे बनें या न बनें। अच्छा दिखना चाहते हैं। ऐसे लोगों की सोच, ऐसे लोगों की चिंतनधारा, दूसरे लोगों के सामने अपने को बेहतर साबित करने की होती है, बेहतर बनने की नहीं। बेहतर साबित करने से कोई लाभ नहीं, बेहतर बनने का प्रयास करो।

मुनिश्री ने कहा कि हम दूसरों के सामने बहुत मधुर व विनम्र बने रहना चाहते हैं लेकिन अंदर क्या है उसको तो वही व्यक्ति जानता है जिसके वह क्रिया हो रही होती है। कैसी-कैसी मनोवृत्ति होती है। एक पति पत्नी का जोड़ा था, उसे जानकारी मिली कि कहीं एक चमत्कारिक कुआँ है। दोनों चमत्कारिक कुआँ के पास गए। इस कुएँ के बारे में ऐसी मान्यता थी कि कुएँ से जो भी चाहो, वह मिल जाता था। मनोकामना की पूर्ति होती थी। उस कुएँ में जाकर झाँक लो, उसकी पूर्ति हो जाती थी। दोनों पहुंचे सबसे पहले पति ने कुएँ में झाँका और कुछ मनोकामना की। बाहर आकर वापस खड़ा हुआ, अब पत्नी की बारी थी। पत्नी कुएँ में झाँकी, ज्यादा झुक गई और नीचे गिर गई। पत्नी को नीचे गिरते देख पति बोला भगवान ये थोड़ा मालूम था कि मनोकामना इतनी जल्दी पूरी होती है। यह व्यवहारिक सोच है, लोगों की स्थिति होती है कि ऊपर से तो बहुत अच्छे बने रहते हैं और भीतर ही भीतर कुछ और घटित होता रहता है। यह सोच अच्छी सोच नहीं है।

मुनिश्री ने कहा कि व्यवहारिक बनिए लेकिन मतलबी नहीं। व्यवहार में विनम्रता रखिए लेकिन अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहिए। सिद्धांत को कतई मत खोईए तब आप जीवन में कुछ अर्जित कर सकेंगे। यह व्यवहारिक सोच है, स्तरीय सोच नहीं मानी जा सकती है लेकिन सबसे अच्छी सोच आध्यात्मिक सोच है।

पेंदुर, सिंधु दुर्ग, महाराष्ट्रः ११ वीं शताब्दी की जैन प्रतिमाएँ तथा मंदिर अवशेष

महाराष्ट्र प्रान्त के कोंकण क्षेत्र में सिंधु दुर्ग जिले में पेंदुर (कट्टा) नामक एक ग्राम है, वहाँ पर ११ वीं शताब्दी के जैन मंदिर के अवशेष और कुछ जैन मूतिर्‍याँ पायी गयी हैं, ये ग्राम सिंधु दुर्ग जिले की प्रसिद्ध धामापुर झील के पास में और तालुका मुख्यालय मालवन से २४ किलोमीटर की दूरी पर ही स्थित है। पेंदुर ग्राम में एक सतरी देवी का मंदिर है उसके पीछे की ओर वन क्षेत्र में एक टीला है जो कि वस्तुतः जैन मंदिर के ही अवशेष हैं, वहां पर प्राचीन मंदिर का तल और टूटी दीवारों के पत्थर इत्यादि मिले हैं, उसी मंदिर के तल चबूतरे पर (२० से ३० फ़ीट लम्बा चौड़ा) वनस्पतियों के झुरमुट में एक पेड़ के इर्द गिर्द कुछ जैन प्रतिमाएं खुले में ही रखी हुई है।

क्षेत्र की पुरा सम्पदा और महत्व

यहाँ स्थित मंदिर के अवशेष ११ वीं सदी के है तथा कुछ प्रतिमाएँ ११ वीं तो कुछ १४ वीं सदी की हैं। कुल सात या आठ प्रतिमाएँ हैं, जिनमें तीन तीर्थंकर की हैं, एक कुबेर की तथा एक अम्बिका यक्षी की है। अन्य प्रतिमाएँ अन्य यक्षी, देवी-देवताओं की हैं। महावीर स्वामी की प्रतिमा थोड़ी बड़ी, सुन्दर और अच्छी अवस्था में है। अम्बिका यक्षी और कुबेर प्रतिमा भी बड़ी है और सुन्दर कलापूर्ण है। प्रतीत होता है कि खुदाई करने पर मंदिर का निचला हिस्सा, खम्भे इत्यादि के हिस्से और कई महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं।

प्रतिमाओं की स्थिति समय के अनुसार जीर्ण हो गयी है किन्तु फिर भी कुबेर, यक्षी अम्बिका तथा तीर्थंकर महावीर की प्रतिमाएँ ठीक अवस्था में है। एक तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक नहीं है, शायद चुरा लिया गया है। प्रतिमाओं पर सिंदूर हल्दी के टीके के निशान है, शायद कभी कभी कोई तंत्र पूजा करता होगा।

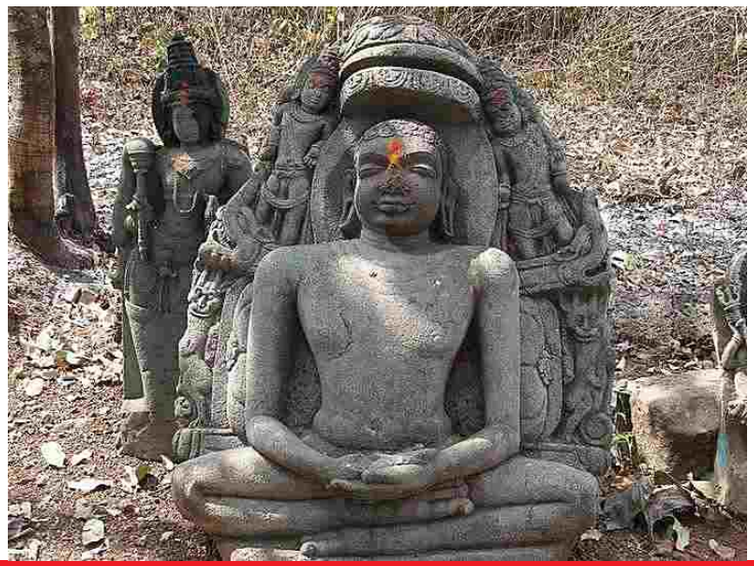

क्षेत्र का इतिहास

यह स्थल कोंकण क्षेत्र के समृद्ध जैन इतिहास और उसके गौरव का एक जीवंत प्रमाण है।

इतिहासकारों के अनुसार ये मंदिर कोल्हापुर के शिलाहार वंश के राजाओं द्वारा पूज्य था। इस मंदिर का निर्माण और मूतिर्‍यों की स्थापना शिलाहार वंश के जैन राजा गंगधारादित्य के समय में ११वीं शताब्दी में हुई थी। शिलाहार वंश (१० वीं से १२ वीं सदी) के लगभग सभी राजा जैन धर्म को ही मानने वाले थे और उन्होंने कोंकण क्षेत्र में गोवा में, खारेपाटन में, चिपलुन में, पेंदुर में और कई जगह जैन मंदिरों का निर्माण कराया था। जैन धर्म भारतवर्ष के हरेक कोने की तरह कोंकण क्षेत्र में भी खूब फला फूला हालाँकि इतिहासकारों और पुरातत्वविदों को अब तक कोंकण और तटीय क्षेत्रों में जैन धर्म के प्राचीन मंदिरों के बारे में कम ही जानकारी है। अतः उनको इस पर ओर अधिक शोध की आवश्यकता है।

कुछ ग्रामीणों के अनुसार १५० वर्ष पहले तक यहाँ १ या २ जैन परिवार निवास करते थे, इससे ये साबित होता है कि उसके बाद ही स्थिति ख़राब हुई है और कम से कम १९वीं सदी तक मंदिर विमान था और पूजा पाठ होता रहा होगा।

वर्तमान स्थिति

वर्तमान में पुरातत्व विभाग ने यहाँ का सर्वेक्षण कराकर १० दिन का एक शिविर लगाया था जिसमें कुछ राष्ट्रीय इतिहासकारों तथा पुरातत्वविदों ने भाग लिया था। वे लोग इस कोंकण और तटीय क्षेत्र में जैन धर्म का इतिहास और पूरा सामग्री पर और शोध की बात कह रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र में जैन धर्म की कई और भी जानकारी सामने आने की सम्भावना है। उनके अनुसार इस स्थल के द्वारा क्षेत्र में जैन

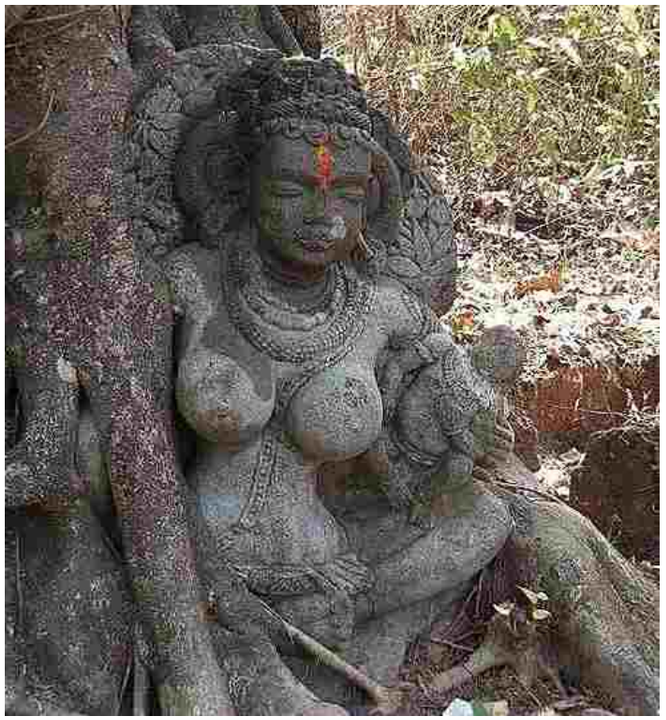

धर्म के बारे में एक नया इतिहास और कुछ नए तथ्य बाहर आने की सम्भावना है । वे अब तक कोंकण और तटीय क्षेत्र में जैन धर्म का विस्तार उतना नहीं मान रहे थे जितना वस्तुतः रहा था ।

हमारा कर्तव्य

आइये, आप और हम जो कुछ भी कर सकते है इस जैन पुरा-संपदा को बचाने के लिए करें । सबसे पहले तो इस स्थल का अधिकाधिक भ्रमण करें, पुरातत्व विभाग से मिलकर या अनुमति लेकर इस स्थल का जीर्णोद्धार करायें, या फिर पुरातात्विक महत्व की प्राचीन जैन प्रतिमाओं को जैन समाज को सौंपने का दबाव बनाये ताकि आस पास या उसी स्थल पर उनकी विधिवत स्थापना करके प्राचीन प्रतिमाओं की सुरक्षा तथा सम्मान सुनिश्चित किया जा सके, कोंकण क्षेत्र के समृद्ध जैन इतिहास और उसके गौरव को पुनः स्थापित किया जा सके ।

- मनीष जैन, उदयपुर

भारत वर्ष का एकमात्र नन्दीश्वर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र 'पांचालेश्वर' महाराष्ट्र

भारतवर्ष जैन धर्म की प्राचीन धर्म भूमि रही है। भारतवर्ष में भगवान् पार्श्वनाथ के क्षेत्र एवं मंदिर सर्वत्र पाए जाते है , भगवान् महावीर स्वामी, भगवान आदिनाथ, भगवान् मुनिसुव्रतनाथ, भगवान् वासुपूज्य तथा अन्य तीर्थंकरों के क्षेत्र एवं मंदिर पाए जाते है ।

भारतवर्ष में नन्दीश्वर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अनूठा क्षेत्र है और वह महाराष्ट्र में है। कहा जाता है, पांचाल नरेश की यह राजधानी थी । यह महाभारत के समय का क्षेत्र माना जाता है । पांचाल नरेश स्वयं जैन धर्मी थे। राक्षसों के साथ पांचाल नरेश का भयंकर युद्ध हुआ और राक्षसों की पराजय हुई, राक्षसों की पराजय के बाद, पांचाल नरेश ने एक भव्य-दिव्य 'नन्दीश्वर जिनालय' का निर्माण कराया। यह क्षेत्र

अतिशयकारी और लुभावना है। गाँव के पश्चिम उत्तर में गोदावरी नदी बहती है, पश्चिम में खारी नदी है, चारों तरफ से पानी बहता है इसलिए यह 'द्वीप' समान है।

इस नन्दीश्वर क्षेत्र पर चौमुखी सर्वतोभद्र, त्रयमूर्ति, बज्रलेप युक्त, हेमाड पंथो पाषाण की है। एक मूर्ति संगमरमर की है, ऐसी ३१ वीतराग मुद्राधारी मूर्तियों के दर्शन होते है।

जैन भूगोल अनुसार ८ वें नन्दीश्वर द्वीप के समान ५२ मंदिर ५२६१०८, ५६१६ मूर्तियाँ प्राचीन समय में रही होंगी, जैसा अनुमान है ग्रंथराज आदिनाथ पुराण में आदि प्रभु के देशनांक गांवों के नाम दिए है, उसमें 'पांचाल' नाम का उल्लेख है।

काशि आवंती कुरु कौशल सुदाम पुड्रान
चेघडगबंग मगध कलिंग भद्रान
'पांचाल' मालव दशार्णदिर्भ
देशाना सन्मार्ग देशानपरो विजहार धीरः ।।

महाराष्ट्र के बीड जिले में, 'तेर' दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र है, वहाँ वीर प्रभु का समवसरण आया था, ऐसा उल्लेख है। 'हरिवंश पुराण' 'शांतिनाथ' पुराणों में 'पांचाल' नाम का उल्लेख है।

इस पांचालेश्वर क्षेत्र पर प्रथम पट्टाचार्य श्रेयांससागर जी, श्री महावीर कीर्तिजी, श्री विमलसागरजी, श्री सुबलसागर जी, तथा तीर्थरक्षा शिरोमणि आचार्य श्री आर्यनंदी महाराज, मुनिश्री जयभद्रजी, मुनिश्री मयंकसागरजी, मुनिश्री मनमीतसागरजी, वर्तमान पट्टाचार्य आचार्यश्री वर्धमान सागरजी पधारे थे। यहाँ १९९५ में प.पू. आचार्य मुनिराज चिदानंदजी का वर्षायोग संपन्न हुआ। भारत गौरव आचार्य गुप्तिनंदी, आचार्य सूर्यसागरजी संसघ पधारे थे।

यह क्षेत्र महाराष्ट्र राज्य के बीड जिले में गेवराई तालुका शलागढ़ के पास राक्षस भुवन से केवल दो किलोमीटर पर है। नन्दीश्वर, भगवान् पद्मप्रभु और भगवान् मुनिसुव्रत नाथ की मूर्ति विराजमान है ।

- एम.सी.जैन, चिकलठाणा

समाचार

एक नई शुरुआत
तमिलनाडु अंचल द्वारा प्राचीन तीर्थक्षेत्रों की यात्रा आयोजित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी – दक्षिण अंचल ने ६-७ अक्टूबर, २०१९ को दक्षिण तमिलनाडु की एक यात्रा का आयोजन किया। यात्रा का मुख्य उद्देश्य यही था कि लोगों को तमिलनाडु की प्राचीन जैन संस्कृति और तीर्थक्षेत्र कमेटी जो भी जीर्णोद्धार का कार्य कर रही है, उसकी जानकारी प्राप्त हो।

करीब ४० यात्रियों का एक ग्रुप चेन्नई से रवाना हुआ। हमारा पहला पड़ाव था 'किलियानूर' यह स्थान चेन्नई से १४५ कि.मी. पर स्थित है। यहाँ पर भगवान् श्री १००८ आदिनाथ की विशाल पद्मासन मुद्रा की प्रतिमा है। यहाँ का मंदिर करीब ८०० वर्ष पुराना है मंदिर का जीर्णोद्धार का काम कई वर्षों से चल रहा है। पूँजी की कमी के कारण कार्य काफी धीमा है। पॉण्डीचेरी और तमिलनाडु के जैन समाज ने मंदिर के जीर्णोद्धार में काफी सहयोग किया है।

यहाँ से रवाना होकर हम करीब ११ बजे थिरुमरुमकुंडम् पहुंचे। यह मंदिर एक छोटी सी पहाड़ी पर है। मंदिर बहुत ही सुन्दर है। मंदिर के अन्दर चट्टान पर पार्श्वनाथ भगवान की खड्गासन प्रतिमा बहुत आकर्षक है। इस मंदिर को तमिल में अंपाड्डाचार जैन मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर की तमिल जैन समाज में बहुत मान्यता है। फरवरी के अंतिम रविवार को यहाँ पर एक बहुत बड़ा धार्मिक आयोजन होता है, जिसमें करीब ५००० लोग उपस्थित होते है। यह मंदिर उलुंडुरपेट से १५ किमी की दूरी पर है।

थिरुमरुमकुंडम मंदिर के दर्शन करके सब कुंभकोणम के लिए रवाना हुए जो कि १२० किमी की दूरी पर है। कुंभकोणम तमिलनाडू का बहुत बड़ा धार्मिक स्थान है, यहाँ पर काफी विशाल हिन्दू मंदिर है। यहाँ से भोजन करके हम लोग दीपांगुडी के लिए रवाना हुए। यह जिनालय कुंभकोणम से ३७ किमी की दूरी पर है। दीपांगुडी में भी आदिनाथ भगवान् का बहुत विशाल मंदिर है जो बहुत ही सुन्दर व आकर्षक है। यह मंदिर करीब १००० वर्ष पुराना है। कहा जाता है कि श्री राम के पुत्र लव और कुश ने दीपांगुडी में भगवान् आदिनाथ की पूजा की थी। कनकगिरि के भट्टारक स्वामी स्वस्ति श्री भुवन कीर्ति जी के निर्देशन में यहाँ पर काफी जीर्णोद्धार का कार्य किया गया है। काफी काम होना बाकी है। यहाँ पर किसी समय पर काफी संख्या में जैन परिवार रहते है जो अभी करीब १० के आस पास है।

दीपांगुडी में दर्शन करने के बाद यात्रा बस मन्नारगुडी के लिए रवाना हुई। मन्नारगुडी में भगवान् श्री मल्लिनाथ जी की मूलनायक प्रतिमा है। मन्नारगुडी का मंदिर भी काफी विशाल है। यहाँ पर आरती व् दर्शन करके सब कुंभकोणम के लिए रवाना हो गये। दीपांगुडी से मन्नारगुडी की दूरी ४० किमी. की है। रात्रि विश्राम कुंभकोणम में हुआ रहने व खाने-पीने की व्यवस्था काफी अच्छी रही।

७-१०-२०१९ को सबेरे कुंभकोणम के दिगम्बर जैन मंदिर के अभिषेक व दर्शन किये। यहाँ का मंदिर करीब २०० वर्ष पुराना है। यहाँ के मूलनायक भगवान् १००८ श्री चंद्रप्रभु है। यह मंदिर यहाँ के श्रेष्ठी श्री रविन्द्र चंद्र जैन के परदादा ने बनवाया था। इसकी देखरेख अभी श्री रविन्द्रचन्द्र जी कर रहे है। मंदिर का अभी जीर्णोद्धार का कार्य जोरों पर है। पूरा खर्चा स्वयं रविन्द्र चंद्र कर रहे है।

कुंभकोणम से हम सित्तनवासल १२० कि.मी. के लिए रवाना हुए। यहाँ पर दूसरी शताब्दी की गुफाएं हैं। ७ वीं से ९ वीं शताब्दी में यह स्थान जैन केंद्र के नाम से विख्यात हुआ। यहाँ की गुफाओं में तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ, चट्टानों पर मुनियों के चरण अंकित हैं। वर्तमान में यह स्थान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत है। यहाँ से रवाना होकर हम लोग तेजापुर में श्री आदिनाथ भगवान् के प्राचीन मंदिर पहुँचे। इस मंदिर में काफी मात्रा में प्राचीन प्रतिमाएँ है, यहाँ पर हमारी यात्रा पूर्ण हुई और हम लोग शाम को ५ बजे चेन्नई के लिए रवाना हो गये, जो यहाँ करीब ३५० कि.मी. की दूरी पर है।

यह यात्रा काफी सफल रही और सानंद सम्पन्न हुयी। इस इलाके में अभी तक कोई मुनिसंघ नही आया है। एक बार सबको यहाँ की यात्रा जरूर करनी चाहिए।

पूरी यात्रा की व्यवस्था श्री रविन्द्र जी (कुंभकोणम) ने बहुत ही शानदार तरीके से की। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी दक्षिण अंचल इनका आभार व्यक्त करती है।

देखकर ही विश्वास किया जा सकता है (Seeing is believing) इस सिद्धांत के साथ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी दक्षिण अंचल का यह पहला प्रयास था। जिससे लोगों को यहाँ की जैन संस्कृति का पता चल सके। इस यात्रा के आयोजन में श्री रविन्द्रचन्द्र जैन (कुंभकोणम) श्री चिन्नप्पा जैन (टिंडीवनम), श्री सुनील काला व श्री संजय सेठी का काफी योगदान रहा।

दिनेश सेठी – अध्यक्ष **संजय ठोलिया- मंत्री**
दक्षिण अंचल

प्रवर्तिका गणिनी आर्यिका श्री गुरुनंदनी माताजी के सयंम के २५ वर्ष

- महावीर साहूजी , औरंगाबाद

भगवान पदमप्रभ जी के ज्ञान कल्याणक के दिन चैत्र शु.१५ दि.२५ अप्रैल १९७० शुक्रवार के दिन (हनुमान जयंती) शाहगढ़ जिला छतरपुर (म. प्र.) में माँ शांतीदेवी की कोख से एक सुबालिका का जन्म हुआ। पिता का नाम डालचंद जैन। बालिका का नाम क्रांति, लाली, गुड़िया रखा गय। आपने इंटर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद संयम मार्ग धारण करने हेतु दि.१३ नवंबर १९५३ दीपावली के दिन द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्र पर ब्रहमचर्य व्रत धारण किया। आपके गृहस्थावस्था में एक भाई श्री सुमित एवं एक बहन रश्मि जैन है। भगवान मुनिसुव्रतनाथजी के मोक्ष कल्याणक फाल्गुन कृष्ण द्वादशी दि. २६ फरवरी १९९० को सिद्धक्षेत्र आहारजी (म.प्र.) पर आर्यिका दीक्षा ग्रहण की । नाम आ. श्री. १०५ गुरुनंदनी माताजी रखा गया ।

आपने आगे आलाप पद्धति, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, प्रवचनसार, सागर धर्मामृत, आचारसार, अष्ठपाहुड़, द्रव्यसंग्रह, कार्तिकेय अनुप्रेक्षा, ज्ञानार्णव, लघु सिद्धान्त कौमुदी, रयणसार, तत्वार्थसूत्र, समाधिसार आदि ग्रंथों का अध्ययन कर आत्म साधना में लीन रहते हुए धर्म की प्रभावना की । आपकी दीक्षा के २५ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं ।

आपको आचार्य श्री १०८ वसुनन्दीजी महाराज द्वारा दि. ३ जनवरी २०१३ को टुण्डला (उत्तर प्रदेश) मे गणिनी पद दिया गया। आप २५ वर्ष के दीक्षा काल मे संपूर्ण भारत भर मे भ्रमणकर लगभग २०,००० कि.मी. की पैदल यात्रा कर जैन धर्म की प्रभावना की । अभी चेन्नई (तमिलनाडू) में वर्षायोग बड़ी धर्म प्रभावना के साथ चल रहा है । संघ में छः आर्यिकाएँ सयंम पथ पर चलकर धर्म प्रभावना कर रही हैं। आपने सम्मेदशिखर जी में रहकर १७० बार वंदना की है। आपके सयंम के २५ वर्ष का आयोजन बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न होगा । आपके संघ के संघपति श्री संजय कागजी दिल्ली हैं एवं ब्र. संजय शास्त्री संघ संचालन कर्ता हैं । आपके इस सयंम मार्ग मे किसी भी प्रकार की बाधा न आए, स्वयं का आत्म कल्याण, धर्म एवं रत्नत्रय की वृद्धि होवे, ऐसी वीतराग प्रभु से प्रार्थना करते हुए आपके चरणों में त्रिबार वंदामि।

सोने के समान तप कर आत्मा कुन्दन बनती है- निर्यापक मुनिश्री सुधासागरजी
तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यता अभियान से जुड़ें- -राजेन्द्र गोधा
२८वाँ श्रावक संस्कार शिविर सानन्द संपन्न

बिजौलिया- - सोने को जब तपाया जाता है तब उसमें से पत्थर अलग होता हैं। सोना और पत्थर एकमेक होते हैं इन्हें भट्टी में तपाया जाता है, इसमें सोना नहीं जलता, इसमें जो मैल है वह जलकर राख हो जाता है। इसी प्रकार इस आत्मा से जो कर्म रूपी मैल लगा है, उसे तपस्या रूपी भट्टी में जला देते हैं तब ये आत्मा मोक्ष को प्राप्त करती है। उक्त आशय के उद्गार तपोदय महा तीर्थ बिजौलिया में २८ वें अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर की विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

संस्कार शिविर में आज भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री व कार्याध्यक्ष राजेन्द्र गोधा जयपुर, श्रमण संस्कृति संस्थान के अध्यक्ष गणेश राणा, प्रदीप लुहाड़िया जयपुर, तीर्थ वंदना के उपसम्पादक विजय जैन धुर्री अशोक नगर, शिविर निर्देशक हुकम काका, दिनेश गगंवाल जयपुर ने महाआरती का सौभाग्य प्राप्त किया।

जैन तीर्थ वंदना से देश भर के भक्तों जोड़ना है

इस अवसर पर जैन तीर्थ वंदना के उप सम्पादक विजय जैन धुर्री ने कहा कि भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री राजेन्द्र गोधा के आह्वान पर तीर्थ वंदना का सदस्यता अभियान चलाने का संकल्प परम पूज्य गुरुदेव मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज के समक्ष लिया है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मुख्य पत्र तीर्थ वंदना से आप सभी को जुड़ने की आवश्यकता है।

तीर्थ वंदना के माध्यम से आप को देश भर में तीर्थ क्षेत्रों की गतिविधियों की जानकारी के साथ ही साधु संतों की अमृत वाणी के साथ-साथ तीर्थ के विकास में अपने योगदान को कहाँ देना है की प्रेरणा मिलती रहेगी।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी सदस्यता अभियान में आप सहयोग दे - राजेन्द्र गोधा

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष सह महामंत्री श्री गोधा ने कहा कि परम पूज्य मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद से देश में एक नई विधा को श्रावक संस्कार शिविर के रूप मे जन्म दिया गया। आज नगर नगर में जहाँ साधु संत विराजमान रहते हैं वह दसलक्षण पर्व में शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। आज यहाँ लघु भारत जैसा नजारा लग रहा है, जहाँ देश के कोने कोने से भक्त आकर धर्म साधना कर रहे हैं। शिविर पुण्यार्जक लाभजी पटवारी साहब ने मुझे बताया कि दक्षिण भारत से सैकड़ों कि संख्या में साथ ही देश के चौदह प्रान्तों से प्रतिनिधि यहाँ पधारे हैं। तीर्थ क्षेत्र कमेटी आप के मंगल भावों की अनुमोदना करती है। उन्होंने कहा कि इस शिविर के माध्यम से देशभर के समाज से मैं आह्वान करता हूँ कि आप तीर्थों की सुरक्षा, उनके रख रखाव सहित विकास के लिए तीर्थ क्षेत्र कमेटी से सीधे जुड़ें, हमारी कोशिश है कि छोटे छोटे गाँव से लेकर शहरों व महा नगरों सभी को तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य बनाना है। समाज के हर परिवार से कम से कम एक सदस्य अवश्य होना चाहिए। यही सन्देश शिविराथिर्यों के माध्यम से देश भर की जैन समाज तक जायेगा।

इस अवसर पर तपोदय तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष लाभ चन्दजी पटवारी, नरेन्द्र जैन, मनोज गोधा सुरेशचंद्र, अनिल संजय जैन, विकास पटवारी ने तिलक श्री फल से तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री राजेन्द्र गोधा, श्रमण संस्कृति संस्थान के अध्यक्ष गणेश राणा, प्रदीप लुहाड़िया का अभिनंदन किया।

इसके पहले उत्तम त्याग धर्म पर सभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव सुधासागरजी महा राज ने कहा कि एक भी व्यक्ति नहीं है जिसने तप ना किया हो जितने लोग हैं चाहे गुड्डा राजा हो हिटलर और यहाँ तक की रावण भी पूर्व भव का तपस्वी था नवनीत में पानी का अंस रहता है उसमें मे जो मरी रहती है उसे तपाकर कर निकाल लिया तो वह शुद्ध घी वन जाता है फिर उसकी मर्यादा असीम हो जातीं हैं

इसी प्रकार आत्मा से राग देव्ष रूपी मरी निकल जाये तो यहाँ आत्मा कुन्दन वन जायेगी।

ये शिविर समयसार की प्रयोगशाला है

उन्होंने कहा कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता तो थोड़ा प्रकटीकल करके तो देखो एक दिन का त्याग कर के तो देखो। एक टाइम का त्याग करो भेद विज्ञान चालू हो गया। ये शिविर समयसार की प्रयोगशाला है लोग पूछे समयसार का प्रकटीकल है यह रहने वाले शिविरार्थीयो ने घर छोड़ा परिवार छोड़ा समस्त वस्त्रों को छोड़कर सिर्फ एक जोड़ी धोती दुपटे में रहते हैं सिगार नहीं करते ये ही तो त्याग की प्रयोग शाला है।

उन वस्तुओं का त्याग करो जो निष्प्रयोजन हैं

मुनि पुगंव ने कहा कि बिना त्याग के मोक्ष मार्ग नहीं बनता है, सबसे पहले उन वस्तुओं का त्याग करना जो हमारी हैं नहीं, होंगी नहीं, उस का त्याग करो जो तुम्हारे थी, उन वस्तुओं का त्याग करो । सप्त व्यसन का त्याग करो, उन वस्तु का त्याग करो तो तुम्हारी जिदंगी के हानि कारक हैं। एक पैंसिल कितने की है- दो रूपये की। वहीं आज तुम्हारे जिदंगी का कोई मूल्य नहीं था लेकिन तुम्हारे सिर को मुनिराज ने छुआ। जिस गुरु को पाने के लिए देवता तरसते है उस गुरु ने तुम्हारे सिर पर भगवान का गधोदक देकर छुआ है इसलिए संकल्प करो कि अब से मैं कोई अभक्ष्य नहीं खाऊँगा। दूसरे उन वस्तुओं का त्याग करें जो तुम्हारी पत्नी को पसंद ना हों, उनसे शब्दों का त्याग करो जो तुम्हारे परिवार को पसंद नहीं हैं, बेटे माँ को पसंद ना हो उनका त्याग कर देना और फिर एक त्याग और कर देना । मैं वो कोई कार्य नहीं करूँगा, जो मेरे गुरु को पसंद ना हो। कभी पूछो महाराज मेरे गुरु को क्या पसंद नहीं है, जो जो मेरे गुरु को पसंद नहीं है, वो नहीं करूँगा। जो तुम्हारे भगवान को पसंद नहीं उसका त्याग करना ।

धन को भोगों में खर्च करोगे तो दुर्गति होगी –

मुनि पुगंव ने कहा कि वास्तविक रूप से ये घर मैंने बनाया है, उसको छोड़ दो, उस पर विचार नहीं करना।मुनि महाराज ऐसा ही करते हैं वह तुम नहीं कर पाओगे तो तुम इतना करना- धन का त्याग नहीं कर सकते तो दान करो। रावण का धन एक नंबर का था। कोषाध्यक्ष ने कहा कि धन बहुत भच रहा है तो रावण कहता है कि महल को सोने का बना दो। इसी प्रकार यदि तुम्हारे मन में विचार आता है और तुम धन को भोगो मे खर्च करोगे तो दुर्गति होगी। गाड़ी का मॉडल बदलने के लिए लाखों रूपये खर्च कर दिया तो समझ लो रावण का अंश तुम्हारे भीतर भी है । लक्ष्मी को जब दाव पर लगाते हैं तो लक्ष्मी अभिशाप देती है एक एक पैसे के लिए आप तरस जाओगे ।ये लक्ष्मी तेरे को धर्मात्मा मानकर आई है, जो धर्म करेगा, चारों प्रकार के दान में लगायेगा वही सफल होगा। लेकिन जैसे ही तुमने लक्ष्मी को व्यसनों में लगाया, पाप में लगाया तो वह अभिशाप देती है। उस लक्ष्मी का अभिशाप रावण आज तक भोग रहा है, वह एक एक दाने के नरकों में तरस रहा है। वहीं भरत चक्रवर्ती ने अपने मत्री से पूछा राजकोष कि क्या स्थिति है, सब कार्य के करने के बाद भी नौ निधियाँ उभर रहीं हैं, भरत चक्रवर्ती कहते हैं जाओ मंत्री जी कैलाश पर्वत पर सोने की त्रिकाल चौबीसी बना दो।

श्रावकरत्न अशोक पाटनी को 'अभिनव चामुंडराय' उपाधि से किया गया अलंकृत

बिजौलियां में श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थ क्षेत्र पर मुनिश्री सुधा सागर महाराज ससंघ के पावन पुनीत सान्निध्य में चातुर्मास कमेटी ने आर .के. मार्बल समूह के अध्यक्ष श्रावकरत्न, परम मुनिभक्त, दानवीर, वर्तमान के भामाशाह श्रीमान् अशोक पाटनी को उनके सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में पिछले ३ दशकों से निरंतर किए जा रहे अतुलनीय कार्यों का अभिनंदन करने के लिए 'अभिनव चामुंडराय' की उपाधि से सम्मानित कर धर्मसभा में विशाल व अद्वितीय स्मृति चिन्ह भेंट किया। पाटनीजी सपरिवार श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थ क्षेत्र पर आयोजित मुनिश्री सुधासागर महाराज के ३७ वें दीक्षा दिवस समारोह में भाग लेने बिजौलियां आए थे। बिजौलियां में श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थ क्षेत्र पर मुनिश्री सुधा सागर महाराज का ३७ वां दीक्षा दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया।

लोहगढ़ की गुफाओं में २१०० वर्ष प्राचीन जैन शिलालेख प्राप्त

५ अक्तूबर २०१९, महाराष्ट्र प्रांत के पुणे जिले की मावळ तहसील के अंतर्गत एक प्राचीन लोहगढ़ नामक किला है, जिसमें कुछ गुफाएँ है। हाल ही में गुफाओं की पानी की टंकियों पर ब्राह्मी लिपि में अंकित शिलालेख प्राप्त हुआ है, जो अनुमानतः २१०० वर्ष प्राचीन है. इस शिलालेख में ''नमो अरिहंतानमः '' का उल्लेख है इस प्रकार का महाराष्ट्र में यह दूसरा शिलालेख है। इसके पूर्व पाले नामक गाँव में ऐसा ही शिलालेख प्राप्त हुआ था, जिससे महाराष्ट्र में जैन परम्परा एवं इतिहास पर शोध को नयी दिशा मिलेगी, ऐसा इतिहासकारों का कहना है.

लोहगढ़ तक जाने वाला मार्ग बहुत कठिन है, जिससे वहाँ जाने वालों की संख्या बहुत कम है. पुणे के शोधकर्ताओं श्री विवेक काळे, डॉ. अभिनव कुरकुटे, उमेय जोशी, साई प्रकाश बेलसरे, निनाद बारटक्के, अजय ढमढेरे को ४० गुणा ५० से. मी. आकार की एक शिला पर ब्राह्मी लिपि में ६ पंक्तियों में ''नमो अरिहंताणम्'' अंकित नजर आया है.

इस शिलालेख का शोध पुणे के डेक्कन कॉलेज के पुरातत्व विभाग तथा इतिहास के जानकार डॉ. श्रीकांत प्रधान, डॉ. अभिनव कुरकुटे, विवेक काळे आदि कर रहे हैं.

डॉ. श्रीकांत प्रधान के अनुसार पाले और लोहगढ़ दोनों स्थानों पर प्राप्त शिलालेखों में समानता है, दोनों पर दानदाता का नाम इदरखित अर्थात इंद्र रक्षित अंकित है, जिससे शोधकर्ताओं का अनुमान है कि महाराष्ट्र के जैनधर्मियों के इतिहास का एवं इन प्राचीन गुफाओं का विशेष संबंध है. शोधकर्ता इन पुरातात्विक अवशेषों पर शोधकार्य संबंधी आलेख शीघ्र ही प्रकाशित करेंगे।

- महावीर दीपचंद ठोले

गुजरात अंचल के पदाधिकारियों की पावागढ़ की निरीक्षण यात्रा

२६/०९/२०१९ को गुजरात अंचल के परमसंरक्षक श्री विजय जैन, अध्यक्ष श्री पारस जैन व मंत्री श्री योगेश जैन ने 'पावागढ़ सिद्ध क्षेत्र' का दौरा किया एवं क्षेत्र की वस्तुस्थिति की सम्पूर्ण जानकारी ली।

पावागढ़ की स्थानीय समिति के अध्यक्ष श्री महेश शाह, महामंत्री श्री शिरीष शाह व ट्रस्टी श्री हँसमुख भाई एवं प्रबंधक श्री जिनेंद्र जैन के साथ पावागढ़ पर्वत के सभी मंदिरों

की समस्याओं को हल करने हेतु विस्तार पूर्वक चर्चा की गई, स्थानीय अध्यक्ष ने कहा कि वे सभी सातों प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए इंजीनियर से व्यय अनुमान पत्रक बनवाकर तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्वीकृति के लिए भेजेंगे और शीघ्र जीर्णोद्धार का कार्य आरम्भ करवाने के लिए प्रयास करेंगे। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जैन के निर्देश पर उनके प्रधान सचिव प्रवीण कुमार जैन (सीएस) ने भी मई २०१९ में पावागढ़ के भव्य दिगंबर जैन मंदिरों की स्थिति को देखने के लिए निरीक्षण यात्रा की थी और यह निश्चय हुआ था कि स्थानीय समिति जीर्णोद्धार करे, जो खर्च आएगा, उसमें भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सहायता करेगी।

तिजारा में सराक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर

हजारों वर्ष जैन संस्कृति को सराकों ने संभाल कर रखा-आचार्य श्री ज्ञानसागर जी

गत २० से २७ सितम्बर २०१९ तक, अतिशय क्षेत्र तिजारा जी में एक माह के अंतराल में दूसरा सराक शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ओडिशा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल से आये लगभग सौ सराक बंधुओं को जैन धर्म, संस्कृति की शिक्षा व प्रशिक्षण के साथ पूजा, भजन, आरती के साथ अन्य जानकारियां भी दी गई। उसी दौरान, बुधवार २५ सितम्बर को सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर व मुनिश्री ज्ञेय सागर जी के सान्निध्य में सराक सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने कहा कि श्रावक का बिगड़ा शब्द है सराक। दिगम्बर साधु श्रमण संस्कृति के नाम से और उनको मानने वाले श्रावक माने जाते हैं। हजारों वर्ष तक अपनी संस्कृति को बचाए रखना सरल नहीं है, पर सराकों ने संभाल कर रखीं। प्रयास हो रहा है २० लाख के लगभग सराकों को जैन मुख्य धारा में जोड़ने का।

परस्परोग्रहो जीवानाम - जिओ और जीने दो, कहते हुए आचार्य श्री ने कहा कि अब हम क्षीण होते जायेंगे, अब युवाओं को आगे आना होगा। युवाओं से बहुत अपेक्षा है। धर्म के प्रति श्रद्धा-आस्था बड़ी मुश्किल से बनती है, पिछले २७ सालों में बहुत कुछ बदल गया है। सराक क्षेत्रों में इस बार दसलक्षण पर्व के दौरान बहुत उत्साह दिखा, वहां लगातार कई कार्यक्रम चल रहे हैं, महिलाओं में भी जागृति आ रही है, यह अच्छा सूचक है।

ब्र. अनीता दीदी ने कहा कि जितनी मेहनत आप लोगों के लिए आचार्य श्री करते हैं, उतना आप भी प्रयास करें। सराक क्षेत्रों में जहां-जहां मन्दिर हैं, वहां रोजाना णमोकार मंत्र की एक-एक माला जरूर करें। आप लोगों ने जो संस्कार यहां सीखे हैं, वहां जाकर सबको बतायें।

३६०० वर्ष पुरानी आदिनाथ जी प्रतिमा वाले क्षेत्र देवलटांड से आये सुरेन्द्र मांझी ने कहा कि गुरु के सहयोग से हम आज वहाँ पहुँच गये, जहाँ हम कभी सोचा करते थे। तवाड़ से आये दयानंद मांझी ने वहां दी जा रही सहायताओं का उल्लेख किया।

पुरी, ओडिशा से आये किरीटी ने कहा कि सराक क्षेत्रों में बड़ा काम हो रहा हैं हम संस्कारी तो थे, पर जैन धर्म को भूल गये थे। पहले अपने को बौद्ध मानने लगे थे, अब फिर जैन मानने लगे हैं, हम पूर्णतः शाकाहारी हैं।

सृष्टिधर ने कहा कि महाराज ने हमें खोई पहचान वापस दिलाई है। हम जाति से नहीं, संस्कार से जैन हैं। अभी हाल में हमेशा की तरह हजार को २१ दिन शिखर जी की यात्रा कराई गई, २५ वर्षों से लगातार शिविर लग रहे हैं।

रांची से आये डा. राम कुमार (एम.डी.), जिन्होंने दिल्ली एम्स में भी सेवायें दी हैं, ने कहा कि जब १८०७ में अंग्रेज मिशनरीज आये, तो शिखरजी से खण्डगिरि तक खूब जोर लगाया कि श्रावकों को धर्मांतरित करें। वे यहां से ग्रंथ ले गये, उनको पढ़ा कि ये किस धर्म से

जुड़े हैं। तब उन्हें मालूम हुआ कि ये आदिदेव से चले आ रहे हैं, ये श्रमण धर्म से जुड़े हैं, इसलिए इन्हें धर्मांतरित नहीं कर पायेंगे। सराक लोग जंगलों में चले गये, पर भागे नहीं, वे जंगल, मुनियों के विचरण के रास्ते थे, उनमें जाकर वो बस गये। ११ हजार साल पहले यह आदिवासी नहीं, श्रावक संस्कृति थी। वहाँ खुदाई में सिक्के मिले हैं, तब पता चला कि श्रावक लोग तांबा आदि का यहां से विदेशों तक व्यापार करते थे। विश्व बैंक के सहयोग से पुरातत्व विभाग खोज कर रहा है। झारखंड में 'श्रावक' बोलते हैं पर बंगाल में 'सराक' क्योंकि बंगाली वर्णमाला, में 'व' अक्षर नहीं है।

आचार्य श्री के साथ १९९३ से जुड़े गोरांग ने कहा कि महाराज सभी कार्यक्रमों में सराक लोगों को बुलाते हैं, सीख देते हैं, कि तुम भी ऐसे बनो, देखो और सीखो। धर्म से जितना जुड़ना चाहिए, उतना नहीं जुड़ पाए हम। अगर इनके रहते हम नहीं सुधर पाये तो त्रिकाल में भी कभी नहीं सुधर पायेंगे। हमें अपने-अपने गांव को सुधारना होगा। हमारे लिए यह महाराज भगवान हैं, हमें यह विश्वास करना होगा। हम जैन थे, छूट गये, फिर इन्होंने पकड़ा और हमें सही मार्ग पर चलाया।

सराक क्षेत्र के इतिहास की पूरी जानकारी रखने वाले, रांची से आये रमेश चंद मांझी, महाराज के १९९३ में सराक प्रवेश के दौरान वहां वे अध्यक्ष थे। उन्होंने कहा कि हमने गुरु को नहीं खोजा, बल्कि गुरु ने शिष्यों को खोजा जैसे रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को खोजा, महावीर स्वामी ने गौतम को खोजा। हमें तीर्थंकरों की पहचान महाराज ने कराई। 'श्रावक' शब्द जैन-बौद्ध दोनों में है। बौद्ध मांस भक्षण करते हैं, पर हम नहीं करते, हम तो अहिंसा को जानते हैं। अशोक के समय एक लाख कंलिगों की हत्या हुई, दस लाख लापता हुये थे। अशोक का समाधिमरण हुआ। हमारे गुरुदेव चमत्कारी हैं। एक बार तेजी से पानी पड़ रहा था, सब रूक गये। महाराज बोले - कहां पानी, बढ़े चलो। और

अगले ही क्षण देखा कि पानी रूक गया था।

पुरी से आये हेमन्त कुमार सराक जैन ने कहा कि हम अपने को बौद्ध समझ रहे थे। पर हमारे आचार-व्यवहार, शाकाहार से हमें सही पहचान मिली कि हम जैन हैं। तब मिथक प्रचार हुआ था कि जैन धर्म का पलायन हो गया है, इसलिए बौद्ध धर्म से जुड़ गए। फिर अब सराक ट्रस्ट के कार्यकर्ता पहुंचे, उन्होंने सही जानकारी दी। हमने पौधा लगा दिया है। अब आने वाली पीढी इसको संचित करेगी।

युवा बालिका पायल ने कहा कि अब तक महाराज ने विश्वास किया है, अब हमें उन पर विश्वास करना होगा। अब हमें भी उठना होगा। युवा वर्ग को अपने गांव के विकास के लिए आगे बढ़ना होगा, पढ़ना होगा। हमें भी आगे आना होगा, अब हमारी बारी है, एक ओर से विकास नहीं हो सकता।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष के रूप में युवा वर्ग का आह्वान करते हुए मैंने कहा कि आचार्य श्री ने सराक क्षेत्र की उपजाऊ पर पौधे अंकुरित कर दिये हैं, अब इन्हें बढ़ाना होगा, संचित करने के लिए पानी के रूप में आवश्यक सहायता जरूरी दी जाती रहेगी। २५ वर्षों से कोचिंग सेंटर, सिलाई सेंटर, कम्प्यूटर सेंटर आगे बढ़ने के लिए, बीमारी के लिए, इलाज और औषधालय अब २५ नई जगहों पर और शुरू किया जायेंगे। अपने बिछुड़े बंधुओं को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए सराक ट्रस्ट विभिन्न योजनाओं का गजराज गंगवाल की अध्यक्षता में विस्तार करने की ओर है।

हम अवसर पर जैनम् फाउण्डेशन के अध्यक्ष अतुल जैन ने कुछ समय पूर्व ओडिशा में आये तूफान से पीड़ित कुछ सराक बंधुओं को सहायता के रूप में चैक प्रदान किये। ओडिशा में कार्यों पर उन्होंने कहा कि जैसे भवन का निर्माण एक-एक ईंट लगाकर होता है, उसी तरह समाज का निर्माण एक-एक व्यक्ति को मिलाकर होता है।

- शरद जैन (सांध्य महालक्ष्मी)

चौक जिनालय में प्रथम धारा महोत्सव में १००८ बच्चों ने संस्कार ग्रहण किए
राजधानी भोपाल में हुआ भव्य आयोजन

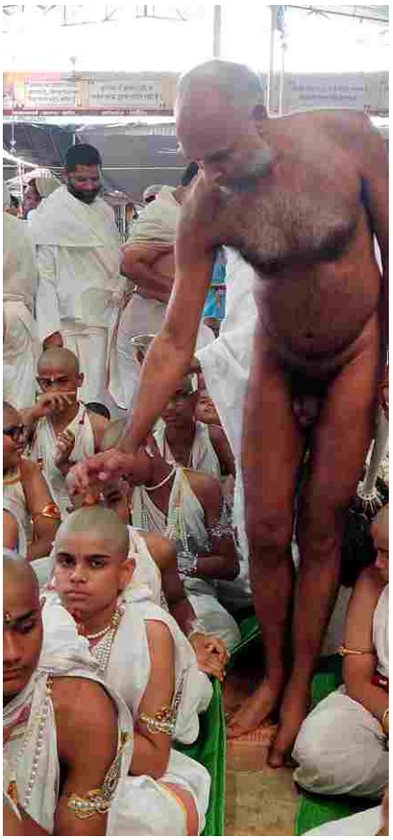

भोपाल- ८ अक्टूबर २०१९। धार्मिक आयोजनों की श्रृंखला में रविवार को एक और यादगार पल भोपाल चातुर्मास में उस समय जुड़ गया, जब मध्य भारत का पहला प्रथम धारा संस्कार जवाहर चौक जिनालय में हुआ।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री प्रसाद सागर जी महाराज, मुनि श्री शैल सागर जी महाराज एवं मुनि श्री निकलंक सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में १००८ बच्चों को जैन धर्म के संस्कारों से संस्कारित करते हुए धर्म के सिद्धांतों से परिचित करवाते हुए सकंल्पित कराया गया। संस्कार पाने देश के कई स्थानों से आये ८ से १६ वर्ष तक की आयु के १००८ बालक उपस्थित थे। किसी बालक के साथ उसके

पिता, किसी के साथ दादा-दादी आए थे।

समारोह में आठ वर्ष के बच्चों को धोती दुपट्टा पहनना सिखाने के बाद भगवान जिनेन्द्र देव का अभिषेक करने की पूरी विधि गुरु मुख से सुनने को और सीखने को मिली। इसके बाद के सभी संस्कार भी मुनि संघ के द्वारा किए गए।

इस अवसर पर जिनालय की झलक किसी बड़े तीर्थ स्थल सी थी। बालकों के शरीर पर श्वेत वस्त्र, माथे पर मुकुट और कुछ आभूषण शोभायमान हो रहे थे। कोई बालकों को इंद्र तो कोई ज्ञानी पंडित की संज्ञा से विभूषित कर रहा था। मुनि संघ ने सफल और सुखद जीवन के लिए कई नियम बताए।

'अंतर्जातीय विवाह न करने के लिए दिलाया संकल्प'

इस अवसर पर बालकों को अंतर्जातीय विवाह न करने एवं मद्य, मांस, मधु का आजीवन त्याग करने के लिए संकल्प भी दिलाया गया।

जैन इतिहास में नर्मदा तट को माना जाता है वैराग्य साधना का पवित्र स्थान

जिस तरह भारत में निर्मित पहला उपग्रह रूस से छोड़ा गया था वैसे ही आज इंदौर के लिए एक अच्छे प्रकल्प की शुरुआत सिद्धोदय नेमावर की भूमि से होने जा रही

दिल्ली में समाधिस्थ राष्ट्रसंत आचार्यश्री विद्यानंद सागरजी महाराज को णमोकार मंत्र का जप कर दी विनयांजलि

२३ सितंबर २०१९ नेमावर। अपने-अपने क्षेत्र की अपनी-अपनी विशेषता रहा करती है। सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर भी अपनी-अलग विशेषता रखता है। जहां जैन इतिहास में नर्मदा तट को वैराग्य साधना का पवित्र स्थान माना जाता है वहीं सनातन संस्कृति में भी नर्मदाजी का एक विशिष्ट स्थान है। नर्मदा अमरकंटक से निकलती है। उसका नाभिकुंड नेमावर को ही माना जाता है। उक्त विचार आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने रविवारीय प्रवचन में व्यक्त किए।

आचार्यश्री ने कहा कि इंदौर प्रतिभास्थली के लिए बड़ी संख्या में दानदाताओं ने दान की घोषणा कर मंगलाचरण किया है, यह नेमावर सिद्ध क्षेत्र से एक बहुत अच्छी शुरुआत है। आप लोग दान दे रहे हैं, दे सकते हैं। हम तो सिर्फ आशीर्वाद दे सकते हैं। आपके दान से स्कूल नहीं, विद्यालय का निर्माण होने जा रहा है। जिस तरह भारत में निर्मित पहला उपग्रह रूस से छोड़ा गया था वैसे ही आज इंदौर के लिए एक अच्छे प्रकल्प की शुरुआत सिद्धोदय नेमावर की इस पवित्र भूमि से होने जा रही है। इंदौर वालों को बांधना आसान नहीं था, लेकिन इस प्रतिभास्थली ने सभी को एक रूप में बांध दिया है।

आचार्यश्री ने कहा कि महानगर इंदौर के लोग मंगलाचरण करने आज यहां आए हैं। आगे का इतिहास इसी मंगलाचरण से इंदौर के लिए बनने वाला है।

दिल्ली में समाधिस्थ राष्ट्रसंत आचार्यश्री विद्यानंदजी महाराज को विनयांजलि

सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने सभी दान-दाताओं का सम्मान किया। रविवार को करीब दस हजार श्रद्धालु उपस्थित रहे। इंदौर से ५१ बसों व २०० से अधिक छोटे वाहनों से लोग नेमावर पहुंचे। प्रवचन के अंत में सभागार में उपस्थित हजारों श्रावकों ने दिल्ली में समाधिस्थ राष्ट्रसंत आचार्यश्री विद्यानंदजी महाराज को णमोकार मंत्र का नौ बार

जप कर विनयांजलि दी।

इंदौर में सहस्त्रकूट जिनालय १००८ निर्माण की घोषणा

जैन समाज के प्रवक्ता नरेंद्र चौधरी ने बताया कि इंदौर में आचार्यश्री के आशीर्वाद से शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहल प्रतिभास्थली के रूप बनने जा रही है। रविवार को इंदौर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आचार्यश्री को इंदौर पधारने का निवेदन करने हेतु नेमावर पहुंचे थे।

इसके साथ ही इंदौर में सहस्त्रकूट जिनालय (जिसमें १००८ प्रतिमाएँ विराजमान होंगी) के निर्माण की घोषणा भी की गई। यह आचार्यश्री के आशीर्वाद से बनने वाला १९वां सहस्त्रकूट जिनालय होगा। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से अमरकंटक में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की विश्व की सबसे वजनदार अष्टधातु की प्रतिमा कमल सिंहासन सहित ५२ टन की विराजमान की गई है। जबलपुर में भी नर्मदा तट के समीप भारत का सबसे बड़ा आयुर्वेद औषधालय निर्माणाधीन है। इसी श्रृंखला में नेमावर में भी पाषाण के सहस्त्रकूट जिनालय के साथ भव्य जैन मंदिर और संत निवास का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

शांति सद्भावना पदयात्रा १७ अक्तूबर २०१९ को पहुँचेगी नेमावर

आचार्य भगवन दीक्षा के पश्चात दक्षिण भारत में आये नहीं हैं, आचार्य भगवन का विहार दक्षिण भारत की ओर हो, यही भावना लेकर २०० से भी ज्यादा श्रावक पदयात्रा कर रहे हैं।

एक ही भावना है आचार्य श्री दक्षिण की ओर आवें। ये सब लोग बाढ़ग्रस्त क्षेत्र से आते हैं। आज भी इन के घर में बाढ़ से जो नुकसान हुआ है, वह पूरी तरह से ठीक भी नहीं हो पाया है तो भी ये लोग आचार्य भगवन को बुलाने के लिए पैदल चल रहे हैं। आचार्य भगवन का विहार दक्षिण की ओर होना जरूरी है। बाढ़ से परेशान होकर भी यही भावना को लेकर ५४० किलोमीटर की यह पैदल यात्रा कर रहे हैं।

मुनिश्री अक्षय सागर जी महाराज जी की प्रेरणा

बा. ब्र. तात्या भैयाजी के मार्गदर्शन में यह पैदल यात्रा निकली है, क्षण क्षण में आचार्य श्री का नाम लेकर हर कदम नेमावर की ओर बढ़ाते जा रहे हैं, मन में एक ही आस है आचार्य भगवान के दर्शन हों और आचार्य भगवन का विहार दक्षिण की ओर हो, जब तक आचार्यश्री दक्षिण की ओर नहीं आते हैं, तब तक यह पैदल यात्रा चलती ही रहेगी।

घर बैठे सभी जैन श्रावक श्राविका को कहना है, यह पैदल यात्रा अच्छी हो, कोई भी बाधा न आवे इसलिये आप लोग घर में मंदिर में एक माला जरूर फेरना।

प्रचार प्रसार प्रमुख-
संतोष बाहुबली पांगळ जैन

'जंगल वाले बाबा ने यम सल्लेखना धारण की'

१२ अक्टूबर २०१९। जुगल-(महाराष्ट्र) संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के परम प्रभाव शिष्य परम पूज्य मुनि श्री चिन्मयसागरजी महाराज (जंगल वाले बाबा) यम सल्लेखना धारण कर ली है। मुनि श्री पिछले पच्चीस दिनों से केवल जल ग्रहण कर रहे थे।

पारस चैनल के निदेशक श्री प्रकाश मोदी ने तीर्थ वंदना के उप सम्पादक विजय जैन धुर्रा को फोन पर बताया कि जंगल वाले बाबा परम पूज्य मुनिश्री चिन्मय सागर जी महाराज ने १२ अक्टूबर को सुबह ७:१५ (शनिवार, चतुर्दशी) की मंगल बेला में यम सल्लेखना धारण कर ली है।

परम पूज्य मुनिश्री चिन्मय सागर जी महाराज 'जंगल वाले बाबा' अपने आत्मोत्थान की ओर अग्रसर है, अपने असाध्य रोगों की पीड़ा का बड़ी दृढ़ता से सामना करते हुए आगे बढ़ रहे है, वे अपनी चैतन्य आत्मा में रमे हुए हैं।

मुनिश्री के यम सल्लेखना धारण करने के समाचार से देशभर से भक्त गुरु के दर्शनार्थ दौड़ रहे हैं।

आठ अक्टूबर को दिया था अंतिम संबोधन

परम पूज्य मुनि श्री १०८ चिन्मय सागर जी महाराज (जंगल वाले बाबा) ने ०८ अक्टूबर, दशमीं पर सबको आशीर्वाद देते हुए अपने अंतिम सम्बोधन में कहा कि मेरी विशुद्धि बढ़ती जा रही है । शारीरिक दुर्बलता के बाद भी उनकी चेतना पहले जैसी प्रखर है । पहले जैसी है । महाराज जी ने विशेष रूप से कहा कि मैं मेरी समाधि के अंतिम समय का संकेत पहले ही कर दूँगा । मगर सबसे बड़ी बात उन्होंने कही कि मैं खड्गासन यानी खड़े-खड़े समाधि लेने की भावना व्यक्त करता हूँ, ये बहुत बड़ा अतिशय होगा । इस प्रकार की अब तक किसी की समाधि नहीं हुई है । धन्य है उनकी इच्छा शक्ति। भगवान से हम प्रार्थना करते हैं कि जैसे उनके भाव है वैसी उनकी समाधि हो व हम सभी उस समय अपनी आंखों से देखें । भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का सम्पूर्ण परिवार यही कामना करता है कि मुनिवर की समाधि उत्कृष्ट हो।

आचार्य श्री विद्यानंद जी को भावभीनी विनयांजलि

आचार्य श्री ने अनुशासन के साथ जीवन जीने की कला सिखाई

नई दिल्ली। २६ सितम्बर २०१९। आचार्य श्री विद्यानंद का समूचा जीवन सदैव दूसरों के लिए अनुकरणीय रहेगा वे जाते-जाते यम सल्लेखना के माध्यम से जीवन जीने की कला के साथ–साथ समाधि का स्वरुप भी समझा गये । वे ही इस युग के एकमात्र ज्येष्ठ व श्रेष्ठ संत थे, जिन्होंने न केवल जैनधर्म को विश्व में विशेष पहचान दिलाई, बल्कि अनुशासन के साथ जीवन जीने की कला भी सिखाई। यह उदगार अनेक संतों, विद्वानों, नेताओं व समाज सेवियों ने आज यहाँ कुंद-कुंद भारती में आयोजित आचार्य श्री की विनयांजलि सभा में व्यक्त किये । विनयांजलि सभा को आचार्य श्री श्रुतसागर, आचार्य श्री वसुनंदी, आचार्य श्री प्रज्ञ सागर एवं आर्यिका प्रज्ञमति व भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनिल जैन सहित अनेक विद्वानों व समाज नेताओं ने संबोधित किया।

आचार्य श्री ज्ञान सागर व उपाध्याय श्री गुप्तिसागर सहित मुनियों के साथ कांग्रेस नेता श्री राहुल गाँधी, केन्द्रीय मत्री डॉ. हर्ष वर्धन, दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल सहित अनेक नेताओं व स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी के संदेश भी पढ़कर सुनाए गये।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अनिल जैन ने कहा कि आचार्य श्री सदैव देश के लिय काम करने की प्रेणना देते थे। उनके अन्दर ग्रहण करने की इतनी ललक रहती थी कि देश के श्रेष्ठ विद्वानों को सुनने के लिये लालपित रहते थे ।

पं. जयकुमार उपाध्ये ने उन्हें इस युग का दैदीप्यमान सूर्य बताया, तो लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति डॉ. रमेश कुमार पण्डे ने कहा कि उन्होंने वाणी के संस्कारों के साथ-साथ भविष्य का मार्ग भी दिखाया । इस अवसर पर पं. वृषभ जैन ने भी अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की।

साहू श्री अखिलेश जैन प्रबंध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ ने बताया आचार्य विद्यानंद जी अहिंसा को मात्र उपदेशों में नहीं बल्कि जीवन-दर्शन का हिस्सा मानते थे । अहिंसा व उनके करुणा उनके रोम-रोम में समाहित थी।

श्री स्वदेश भूषण जैन ने बताया, उनकी वक्तृत्व कला में एक अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था कि सभी को उनकी बात सहज रूप से समझ में आ जाती थी ।

जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन ने कहा कि आचार्य श्री सदैव हमारे दिलों में जीवित रहकर हमें प्रेरणा देते रहेंगे। सभा का संचालन करते हुए डॉ. वीर सागर जैन ने आचार्य श्री विद्यानंद को इस युग का ऐसा सूर्य बताया जो कभी अस्त नहीं हो सकता ।

- स्वराज जैन, नई दिल्ली

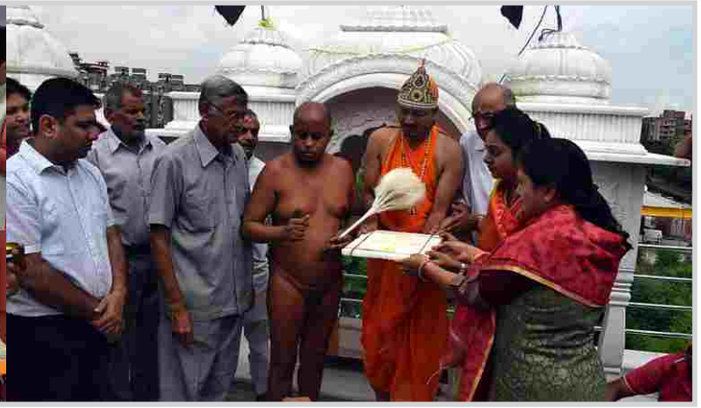

श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज की स्वहस्तलिखित पर्सनल डायरी के आधार पर उनके अंतेवासी शिष्य आचार्य श्री प्रज्ञसागरजी मुनिराज को श्वेत पिच्छी भेंट कर परंपराचार्य पद से विभूषित किया दिल्ली जैन समाज ने

पैठण में मुनिसुव्रतनाथ का हुआ महामस्तकाभिषेक

२०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ भगवान अतिशय क्षेत्र पैठण में शनि अमावस्या पर शनिवार को भगवान मुनिसुव्रतनाथ का महामस्तक अभिषेक महोत्सव का आयोजन किया गया। भगवान के दर्शन के लिए बडी संख्या में श्रध्दालु पैठण पहुंचे थे। पंडित दीपक जैन की उपस्थिती में भगवान मुनिसुव्रतनाथ विधान संपन्न हुआ। श्री विजयकुमार पाटोदी हैदराबाद, श्री अशोक जैन दिल्ली के हाथों धर्मध्वजारोहन व विधान संपन्न हुआ। दीप प्रज्वलन श्री जंबुकुमार सरावगी, श्री प्रदीप पहाडे के हाथों हुआ। इस अवसर पर भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ का पंचामृत अभिषेक किया गया। दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल, श्री प्रमोद जमनलालजी कासलीवाल का अभिनंदन किया गया।

हैदराबाद, मुंबई, पुणे, नासिक, नागपुर, औरंगाबाद, बीड, परभणी, दिल्ली आदि प्रमुख शहरों से बड़ी संख्या में श्रध्दालुओं का आगमन हुआ था। क्षेत्र पर आनेवाले सभी यात्रियों को श्री अशोककुमार पारस चुडीवाल की ओर से निशुल्क भोजन व्यवस्था की गई है। श्री झुंबरलाल काला नेत्रालय में रोज नेत्र पीड़ीतों का नि:शुल्क इलाज किया जाता है, मोतियाबिंदु का नि:शुल्क ऑपरेशन किया जाता है। श्रीमती सूरजबाई पुनमचंद बाकलीवाल अतिथि भवन का निर्माण हुआ है एवं डॉ. पन्नालाल पापडीवाल धर्मशाला, श्रीमती चंदनबाई माणिकचंद बडजाते धर्मशाला का निर्माण हुआ है।

श्री अखिलेष जैन बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष मनोनित

वैशाली (बिहार)। बिहार सरकार में विधि सचिव के पद पर कार्य कर चुके वरिष्ठ समाजसेवी श्री अखिलेष कुमार जैन को बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड का अध्यक्ष मनोनित किया है।

भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली के कार्याध्यक्ष श्री अनिल जैन कनाडा ने बताया कि बिहार सरकार के गजट नोटिफिकेशन में बुधवार २८ अगस्त २०१९ को बिहार राज्यपाल महोदय ने उनका मनोनयन किया है।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'

उदयपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ विविध कार्यक्रम

उदयपुर सितम्बर २०१९। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर दीक्षा शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर श्री मोहनलाल सुखाड़िया वि. वि. उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के आयोजकत्व और अन्तर्मुखी चातुर्मास व्यवस्था समिति-उदयपुर के प्रायोजकत्व में दिनांक २९ सितम्बर २०१९ को श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अशोकनगर उदयपुर में प्रात: ८ बजे से राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी संपन्न हुई तथा इसी अवसर पर श्रीफल पुरस्कार समर्पण समारोह, सरस्वती आराधना, गुरुपूजन, नाटिका पाठशाला, पार्श्वनाथ चालीसा नृत्यनाटिका, ''जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी'' द्वारा आयोजित आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के प्रति विनयांजलि सभा के साथ विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी

सर्व प्रथम ''जैनविद्या एवं प्राकृत पत्रकारिता की आधुनिक प्रासंगिकता'' विषय पर राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र पं. सम्राट शास्त्री के मंगलाचरण और उपस्थित अतिथियों द्वारा दीपप्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। प्रो. वीरसागर जैन-दिल्ली के अध्यक्ष चयन के उपरान्त संगोष्ठी के निर्देशक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने स्वागत भाषण दिया। इस सत्र के सारस्वत अतिथि प्रो. श्री उदयचन्द जैन-उदयपुर और मुख्य वक्ता डॉ. महेश जैन-भोपाल थे, विषय प्रवर्तन डॉ. ज्योतिबाबू जैन-उदयपुर ने किया, डॉ. धर्मेन्द्र जैन और डॉ. रजनीश शुक्ला-नई दिल्ली ने जैन विद्या एवं प्राकृत पत्रकारिता की आधुनिक प्रासंगिकता विषय पर अपने वक्तव्य दिये। सत्र का संयोजन डॉ. सुमत कुमार जैन ने व धन्यबाद ज्ञापन डॉ. ज्योतिबाबू जैन ने किया।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र १ बजे प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रेम सुमन जैन-उदयपुर ने की, सारस्वत आतिथि डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'-इन्दौर को बनाया गया। इस सत्र में वैज्ञानिक श्री पी.एन. अग्रवाल, श्री अकलेश जैन-अजमेर, श्री मनीष जैन-शाहगढ़, श्री तपिस कुमार जैन, श्रीमती रीना जैन, सारस्वत अतिथि डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' व संगोष्ठी निर्देशक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने संबोधित किया। प्रो. जिनेन्द्र जी ने बताया कि प्राकृत की - भावणासारो, तित्थयर भावणा और विराग सेतु ये पुस्तकें श्री मोहनलाल सुखड़िया वि.वि. के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की प्रक्रिया में हैं। डॉ. मनुज के वक्तव्य के उत्तर में प्रो. प्रेम सुमन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ''जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी'' द्वारा ''पाइय पीयूस'' नाम से एक प्राकृत पत्रिका प्रारंभ करने की घोषणा की। इस सत्र का संचालन डॉ. सुनील संचय- ललितपुर ने किया। संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. ज्योतिबाबू जैन, सह प्रोफेसर श्री मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि उदयपुर थे।

श्रीफल पुरस्कार समर्पण समारोह

संगोष्ठी के प्रथम सत्र के उपरान्त पूज्य मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य और उनके निर्देशन में प्रतिष्ठित श्रीफल पुरस्कार समिर्पित किये गये। ये पुरस्कार १.श्री रविदत्त मेहता, २. श्री राजेश माली, ३. श्री विकास जैन, ४. श्री सचिन चैधरी, ५. श्री देवकुमार, ६. श्री व्रजेश कुमार झा और ७. श्री चन्द्र प्रकाश वेद ने प्राप्त किये।

आचार्य विद्यानंद-विनयांजलि सभा

'जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी-उदयपुर'' द्वारा आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के प्रति विनयांजलि सभा आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. प्रेम सुमन जैन ने की, संचालन प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन ने किया तथा संगोष्ठी में आगत प्रायः सभी विद्वानों-पत्रकारों ने अपने उद्गार व्यक्त कर विनयांजलि समर्पित की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

पूज्य मुनिश्री पूज्यसागर जी महाराज एवं पूज्य मुनि श्री अनुक्रमसागर जी महाराज के ही पावन सान्निध्य में विविध महिलामण्डलों द्वारा, सरस्वती आराधना, अष्ट प्रातिहार्य पूजन, गुरुपूजन किया गया, पार्श्वनाथ चालीसा के आधार पर भगवान् पार्श्वनाथ के भव-जीवन की घटनायें दिखाते हुए नृत्यनाटिका प्रस्तुत की गई, बच्चों ने 'पाठशाला' नाटक प्रस्तुत किया। नौ घंटे लगातार नृत्य प्रस्तुत करने वाली कनिष्का चित्तौड़ा ने जैन भजन पर नृत्य तथा शास्त्रीय-कत्थक नृत्य प्रस्तुत किया।

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

यरनाल में मनाया आचार्य शांतिसागरजी का ६४ वाँ पुण्य स्मरण दिवस

जीवन जीना व कैसे मरण करना सिखाया आ. शांतिसागरजी ने - आ. वर्धमानसागरजी

यरनाल। चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की दीक्षा स्थली यरनाल (कर्नाटक) में चातुर्मासरत वात्सल्य वारिधि, राष्ट्रगौरव पट्टाधीष आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज का ६४ वाँ समाधि दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने इस अवसर पर कहा कि आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज इस युग के महान रत्न थे जिन्होनें हम सबका बहुत उपकार करते हुए हमें जीना भी सिखाया और मरना भी सिखाया। संसारी प्राणी जहाँ जीवन में जन्म को मंगलकारी मानते है, खुशियाँ मनाते है, मृत्यु को अमंगलकारी मानते है व इष्ट का मरण होने पर शोक मनाते है। आचार्यश्री शांतिसागरजी का जन्म मुनि दीक्षा के रूप में हुआ था जब भी वे प्रसन्न थे लेकिन जब वे समाधि की ओर अग्रसर हुए तब उनकी प्रसन्नता और बढ़ती गई। आज उनका सम्पूर्ण जीवन हम चारित्र चक्रवर्ती के रूप में जानते है।

इस अवसर पर आचार्यश्री शांतिसागरजी के जीवन चरित्र 'चारित्र चक्रवर्ती' के लेखक पण्डित सुमेरू चंद्र दिवाकर (सिवनी), णमोत्थु सूखिर्य (कन्नड़ भाषा) की लेखिका आर्यिका श्री विशुद्ध मति माताजी एवं आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज के प्रमुख चित्रों के एक कैलेण्डर का विमोचन किया गया।

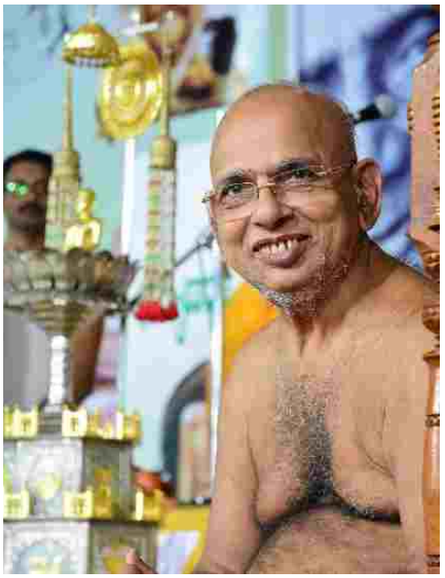

आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की समाधि समय ६:५५ बजे विश्वशांति हेतु महामंत्र का १०८ बार सामूहिक जाप किया गया। समारोह में वीर सेवादल कर्नाटक, महाराष्ट्र के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में एकत्रित हुए। दीप प्रज्ज्वलन शशिकांत राजूबा, आनंदजी उगारे, एन.के.पाटिल आदि ने किया।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'

परम पावन सिद्धक्षेत्र बावनगजाजी में श्रावक संस्कार शिविर संम्पन्न

मध्यप्रदेश के बड़वानी जिला अंतर्गत प्रकृति के सुरम्य वातावरण के मध्य अवस्थित श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा में पर्वराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग में दिनांक ३ सितम्बर से १२ सितम्बर २०१९ तक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रमाणक गुणायतन प्रणेता, भावना योग प्रवर्तक मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज एवं मुनि श्री विराटसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रावक संस्कार भव्य प्रमावना एवं ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सानंद संपन्न हुआ। इस वर्ष पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज द्वारा प्रात: काल कराये जाने वाले भावना योग का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावी एवं विशेष आकर्षण का प्रसंग बना।

प्रतिदिन प्रात: भावना योग के उपरान्त जिनाभिषेक, शांतिधारा, पूजन, दशलक्षण महामंडल विधान एवं मुनि द्वय द्वारा धर्म के दश लक्षणों पर प्रवचन हुए। पूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज द्वारा मानव मन को परिष्कृत करने वाले प्रवचनों का शिविरार्थियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा फलस्वरूप शिविरार्थियों ने सदाचार ग्रहण के साथ ही उत्तम त्याग के प्रसंग में क्षेत्र के विकास एवं जीवदया के लिए उदारता पुर्वक दान राशि की स्वीकृति प्रदान की। इसी क्रम में पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से बाड़ पीड़ितों के लिए दो करोड़ से अधिक एवं जीवदया के लिए तीन करोड़ से अधिक की राशि भेजी गयीं।

मध्याह्न समय ग्रंथराज तत्वार्थसूत्र का वाचन तदुपरान्त मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज द्वारा १-१ अध्याय का अर्थ एवं अनुवाद प्रतिपादित किया गया तथा मुनि श्री विराटसागर जी महाराज द्वारा प्रतिकमण एवं सामायिक पाठ का कार्यकम सम्पन्न हुआ। संध्या समय शंका समाधान एवं आरती का कार्यकम सम्पन्न हुआ। आगत शिविरार्थीयों के आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था तथा बड़वानी से आने जाने की सुचारू व्यवस्था की शिविरार्थीयों ने भूरी - भूरी प्रशंसा की। शिविर की सुन्दर एवं प्रशंसनीय व्यवस्था में क्षेत्र समिति एवं चातुर्मास धर्म प्रमावना समिति के अतिरिक्त बड़वानी एवं निमाड़ युवासंघ, महिला संघ तथा ललितपुर से पधारे प्रमाण सागर सेवा संघ के कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ताओं का प्रशंसनीय योगदान रह। शिविर में सम्पूर्ण भारत के

अतिरिक्त अमेरिका एवं सिंगापुर के भी शिविरार्थी माग लेने आये थे। दशलक्षण महामंडल विधान के सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य श्री महावीर जी लुहाड़िया (गुणायतन ट्रस्टी) कोलकाता को प्राप्त हुआ।

कोलकाता से पधारे श्री मुन्नालाल पहाड़िया के मधुर स्वर एवं आध्यात्मिक भजनों ने पूजन विधान में भक्ति का अद्भुत समा पैदा कर दिया। तथा रतलाम के युवा श्री नीलेश गोधा एवं श्री विशाल गोधा की संगीतमय प्रस्तुति भी प्रशंसनीय रही। संम्पूर्ण कार्यकम बा. ब्र. अशोक भैया के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें गया (बिहार) से पधारे ब्र. विमल कुमार सेठी का भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

कुण्डलपुर में सम्पन्न हुआ वृहद आयोजन : संयम कीर्ति स्तंभ का लोकार्पण, सहस्त्रकूट जिनालय का शिलान्यास और पंच बालयति मंदिरों के गर्भग्रहों में चाबी स्थापना

३० सितंबर २०१९.दमोह, कुण्डलपुर में निर्यापक मुनि श्री समय सागर जी महाराज के ससंघ मंगल सान्निध्य में प्रातःकाल बड़े बाबा के पूजन अभिषेक के पश्चात कोलकाता के विनोद-किरण जी काला परिवार के द्वारा संयम स्वर्ण कीर्ति स्तंभ का लोकार्पण किया गया। जबकि दोपहर में आयोजित श्री सहस्त्रकूट जिनालय के शिलान्यास का सौभाग्य अशोक पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ। पंच बालयति मंदिरो के गर्भग्रह पर चाबी स्थापना का सौभाग्य विनोद-किरण काला कोलकाता एवं प्रेमचंद्र उपकार सागर को प्राप्त हुआ। चाबी की स्थापना का अद्भुत नजारा हजारों श्रद्धालुगणों ने अपनी आँखों से देखने का सौभाग्य प्राप्त किया। चाबी रूपी बहुत बड़ी शिला को क्रेन के माध्यम से हवाई मार्ग से ले जाकर मंदिर के डोम पर स्थापित किया गया। तेज वर्षा के बावजूद हजारों श्रद्धालुओं ने चाबी स्थापना के कार्यक्रम को बहुत ही उत्साह पूर्वक देखने का सौभाग्य प्राप्त् किया।

इसके पूर्व मुख्य पंडाल में आयोजित कार्यक्रम में जिनवाणी चैनल पर विद्या श्री गीत संगीत कार्यक्रम में फाइनल में जगह बनाने वाली कु. अनुश्री ने मधुर कंठ से मंगलाचरण किया। श्रेष्ठी वर्ग ने बड़े बाबा छोटेबाबा के चित्र के समक्ष ज्ञान ज्योति का प्रज्जवलन किया। अनेक भक्तगणों ने बड़े बाबा मंदिर हेतु शिलाओं एवं प्रतिमाओं को विराजमान करने हेतु घोषणाएं की। कुण्डलपुर कमेटी की ओर से अतिथियों का स्मुति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। इसके पूर्व क्षेत्र पर निर्मित नवीन कार्यालय का उद्घाटन हुआ। संतो की चरणरज एवं आशीर्वाद कमेंटी के पदाधिकारियों को प्राप्त हुआ। सायंकाल क्षमावाणी पर्व पर कमेटी की ओर से श्रावकगणों को निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गई। रात्रि ०७.०० बजे बड़े बाबा की महाआरती का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कमेटी के पदाधिकारियों एवं समितियों के सदस्यों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर मुनि श्री समय सागर जी महाराज ने कहा मनुष्य पर्याय बहुत महत्वपूर्ण पर्याय है। सौधर्म इंद्र आदि पद संयम के फलस्वरूप ही प्राप्त होते है। तप से नहीं मिलते रत्नत्रय की आराधना से प्राप्त होते है। अज्ञानी का तप स्वर्ग दिला सकता है। किंतु स्वर्ग नही दिला सकता है। सौधर्म इंद्र के पास अतुल ज्ञान भंडार होता है। किंतु ज्ञान में सुगंधि चारित्र के कारण आती है। फूल सुंदर है तोड़ने की इच्छा होती है किंतु उसमें सुगंधि नहीं क्योंकि वह कागज का फूल है। रत्नत्रय के अभाव में ज्ञान का मूल्य नहीं है। ज्ञान औषधि के रूप में कार्य करता है। भगवान पूजा से प्रसन्न नही होते प्रभावित नहीं होते। उनकी आज्ञा का पालन करते है तब प्रसन्न होते है। आदेश का पालन आज्ञा सम्यक्त्व है। गुरू भगवान से कम नहीं है। क्योंकि भगवान की पहचान गुरू ने कराई है। संस्कार गुरूओं से ही डलते हैं और पल्लवित होते है। हृदय में आज्ञा जगाने वाले गुरू ही होते है। गुरू को यदि प्रकाश मिला है तो गुरू के द्वारा मिला। आत्मा पर दृष्ठि रखने के लिये बहुत साधना की आवश्यकता होती है।

जो गुणी होता है वह देव शास्त्र गुरू के प्रति समर्पण का भाव रखता है। सम्यगदृष्टि की प्रशंसा होती है। यह पुण्य एकत्र करने का महान आयोजन है। इसके लिए आचार्य महाराज के आशीर्वाद है। सिद्धक्षेत्र का प्रभाव अद्भुत प्रभाव होता है।

सुधारमति माताजी की खजुराहो में हुई समाधि, अणुव्रतों से महाव्रतों की साधना समाधि के लिए होती है

खजुराहो - संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की परम शिष्या परम पूज्य आर्यिका रत्न श्री अनंत मति माताजी, आर्यिका रत्न श्री विमल मति माताजी, आर्यिका रत्न श्री निर्मल मति माताजी, ससंघ २३ आर्यिका माताजी संघ में विराजमान 'आर्यिका श्री सुधारमति माताजी' का समाधिमरण गत दिवस हो गया यह समाचार आते ही सैकड़ों भक्त खजुराहो पहुकर अंतिम यात्रा में सम्मिलित हुए। इधर माताजी की जन्म स्थली पर परम पूज्य मुनि श्री प्रशांत सागर जी महाराज, मुनिश्री निर्वेगसागर जी महाराज के सान्निध्य में समाधिस्थ आर्यिका श्री सुधारमति माताजी को जैन समाज द्वारा विनयांजलि अर्पित की गई।

विनयांजलि सभा में तीर्थवंदना के सह सम्पादक व जैन युवा वर्ग के अध्यक्ष विजय धुर्रा ने कहा कि अशोक नगर की माटी में पली बड़ी और आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के करकमलों से वहन सुनीता कठरया से आर्यिका दीक्षा लेकर सुधारमति माताजी बनकर अहिंसा धर्म की प्रभावना की।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से दी विनयांजलि

उन्होंने ने कहा कि किसी नगर का नाम व्यापार के कारण उद्योग के कारण या नेता के कारण होता हैं हमारे नगर का नाम संत के कारण गौरवान्वित हुआ हमारे बीच की बहन ने माताजी बनकर देह का त्याग कर नगर के नाम को रोशन किया उनके समाधिमरण पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करती हैं । हमारे राष्ट्रीय महासचिव राजेन्द्र गोधा जी ने पूज्य माताजी की समाधि की विस्तृत जानकारी ली व तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर हार्दिक विनयांजलि अर्पित की है।

अनीता दीदी ने कहा कि सीधी सरल व्यक्ति की धनी सुधारमति माताजी ने १९८९ में मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में अपनी साधना को प्रारंभ किया और आचार्य श्री से नेमावर में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर अपनी स्त्री पर्याय को धन्य किया। सहमंत्री नरेश वारी ने कहा कि नगर के श्रावक श्रेष्ठी केवल चन्दजी कठरया के घर जन्मी बहन सुनीता दीदी ने अपने जीवन का उपसन्ह आर्यिका व्रतों के साथ सल्लेखना पूर्व क समाधिमरण के साथ किया जो बहुत दुर्लभ है।

विनयांजलि सभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री प्रशांत सागर जी महाराज ने कहाँ कि एक वार जो व्रतो को ग्रहण कर लेता है वह व्रतो को नहीं छोड़ता है अणुव्रतो से महाव्रतो तक साधना से ही समाधिमरण को प्राप्त कर सकते है अशोक नगर की बहन ने सुधारमति माताजी बनकर इस उत्कृष्ट समाधिमरण को प्राप्त किया उन्होंने जो कार्य किया वहुत सराहनीय कार्य किया अपने जीतेजी अपनी मृत्यु को देखना और अपनी ओर देखते देखते शरीर को त्याग दिया। इतना ही है कि व्यक्ति जैसा आता है वैसा ही जायेगा इसका मतलब है कि जैसा आने पर सब

का त्याग कर जीवन प्रारंभ करते हैं वैसे ही जाने के तीन चार घन्टे पूर्व सब त्याग कर देना चाहिए उन्होंने अंत समय चारों प्रकार के आहार का त्याग कर सल्लेखना पूर्वक समाधि ग्रहण की। सुधारमति ने अपने नाम को सार्थक करते, जन्म सुधारा और मरण, दोनों को सुधार लिया।

जन्म के साथ मृत्यु भी निश्चित है

मुनि श्री निर्वेगसागरजी महाराज ने कहा कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है लेकिन कव आयेगी ये किसी को पता नहीं है जैन दर्शन में जन्म के साथ मरण की कला सिखाई जातीं हैं।

जैसे कि सीमा पर स्थित सैनिक हर समय तैयार रहते हैं और उनकी नजर गन के लैंस पर लगी रहती हैं वह हर समय चौकन्ना होकर दुश्मन पर नजर रखता है वैसे ही साधक हर समय अपने आप पर नजर रखते हुए सावधान रहता है। हमने देखा कि सुधारमति सन्तुष्टमति को साथ लेकर अपनी बात संघ में रख लेते हैं उन्होंने वहुत अच्छी तरह से समाधि को प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक किया पिछली बार आपके नगर में संत मिला था हर समय धर्म चर्चा के साथ तत्व को समझने की लगन लगी रहती थी वड़ी वड़ी आर्यिकाओ के साथ रहकर उपदेश आदि से दुर रहते हुए भी वह अपनी साधना किया करतीं थीं इसी साधना ने सुधारमति नाम को सार्थक करते हुए अपने आप को सुधारकर जीवन सफल वना लिया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने सम्मेद शिखरजी की वंदना के साथ-२ किया पर्वत का निरीक्षण

तीर्थराज सम्मेद शिखरजी में अहिंसा यात्रा के समापन पर भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जैन और मंत्री श्री विनोद जैन कोयला का स्वागत करते हुए डॉ. कल्याण गंगवाल, श्री एमपी अजमेरा व श्री मणींद्र जैन

शाश्वत ट्रस्ट की बैठक की अध्यक्षता करते हुए भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जैन, साथ में हैं प्रबंध न्यासी श्री राजेंद्र गोधा, महामंत्री

शिखरजी- बीस तीर्थंकरों एवं करोड़ों सिद्धों की निर्वाण भूमि शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी पर्वत पर तीर्थ यात्रियों की सुविधा-व्यवस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की देखरेख में होती आ रही है। तीर्थयात्रियों को दर्शन वंदना में किसी तरह की परेशानी न हो, इसके लिये कमेटी की ओर से पर्वत पर सुरक्षा गार्ड तथा टोंकों के अभिषेक पूजन हेतु पुजारी नियुक्त किए गए हैं। जगह- जगह शुद्ध पेय जल तथा उकाली की व्यवस्था की गई है। श्री गौतमस्वामी टोंक एवं श्रीपार्श्वनाथ टोंक के निकट प्राथमिक चिकित्सा केंद्र बनाए गए हैं। श्री पार्श्वनाथ टोंक के पास भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा निर्मित सुविधा केंद्र से तीर्थयात्री छत्र आदि प्राप्त कर श्रीपार्श्वनाथ भगवान के चरणों में समर्पित कर पुण्य संचय करते हैं।

दिनांक २२ सितम्बर २०१९ को श्री दि. जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट की बैठक में पधारे तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र सवाईलाल जैन मुंबई, कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेन्द्र कुमार गोधा जयपुर, शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन हजारीबाग, मंत्री श्री खुशाल जैन(सी.ए.) मुंबई, मंत्री श्री हुकम जैन काका कोटा, श्री ज्ञानचन्द्र जैन झांझरी जयपुर, श्री विनोद कुमार जैन कोयला वाले बिलासपुर, श्री डी.यू. जैन मुंबई, श्री प्रेमचन्द्र जैन''प्रेमी'', राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रधान सचिव श्री प्रवीण जैन (सीएस) मुंबई, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, श्री प्रवीण जैन दिल्ली एवं श्री निखिल जैन आदि पदाधिकारी तथा सभी शिखर जी कार्यालय के पदाधिकारियों के साथ दिनांक २३ सितम्बर २०१९ को पर्वत की वंदना करने के लिए गये थे जहाँ न सभी ने अत्यंत भक्तिभाव पूर्वक पर्वतराज की वंदना की।

कमेटी की टीम ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में जगह-जगह लगवाये गये सूक्तियों तथा दिशा-निर्देश बोर्डों तथा कमेटी द्वारा करवाये गये विभिन्न कार्यों का निरीक्षण किया। माननीय अध्यक्ष महोदय ने तीर्थयात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण, सफाई-स्वच्छता, पवित्रता तथा धार्मिक प्रभावना, सम्मेदशिखर विकास सम्बंधित

अनेक कार्यों को शीघ्रता से करवाने का निर्देश देते हुए कर्मचारियों को आगाह किया कि किसी भी कार्य में कोताही न वरतें। तीर्थ वंदना करते हुए यात्रियों से प्लास्टिक का उपयोग न करने तथा नाश्ते-पानी के रैपर-बोतलें आदि थैली में ही नीचे वापस ले आने का आह्वान किया ताकि पर्वत पर गंदगी न फैले तथा पर्वत की पवित्रता बनी रहे।

श्री सम्मेद शिखरजी में तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्थानीय कार्यालय के प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, सह-प्रबंधक श्री देवेन्द्र कुमार जैन, पी.आर.ओ. श्री पवनदेव कुमार शर्मा, पर्वत निरीक्षक श्री विष्णु, प्रभारी श्री राधेश कुमार पाठक, पुजारी श्री अशोक कुमार जैन, श्री प्रदीप जैन, श्री शक्ति पद सराक, श्री मधुसूदन सराक, श्री दुखन महाराज, श्री चेतलाल महतो, श्री मनोज महतो, श्री सुनील कुमार अग्रवाल, सुरक्षा गार्ड श्री भागीरथ महतो, श्री कैलाश सिंह, श्री सूरज तुरी, श्री शम्भुनाथ महतो, श्रीविश्वनाथ महतो, श्री भरत महतो, श्री नकुल महतो, प्याउ-कर्मी श्री वासुदेव महतो, श्री रति राय, श्री सुखदेव महतो, श्री शंकर महतो एवं श्री मंगर सिंह आदि समस्त कर्मचारियों ने पधारे हुए समस्त पदाधिकारियों का स्वागत किया।

-देवेन्द्र कुमार जैन,

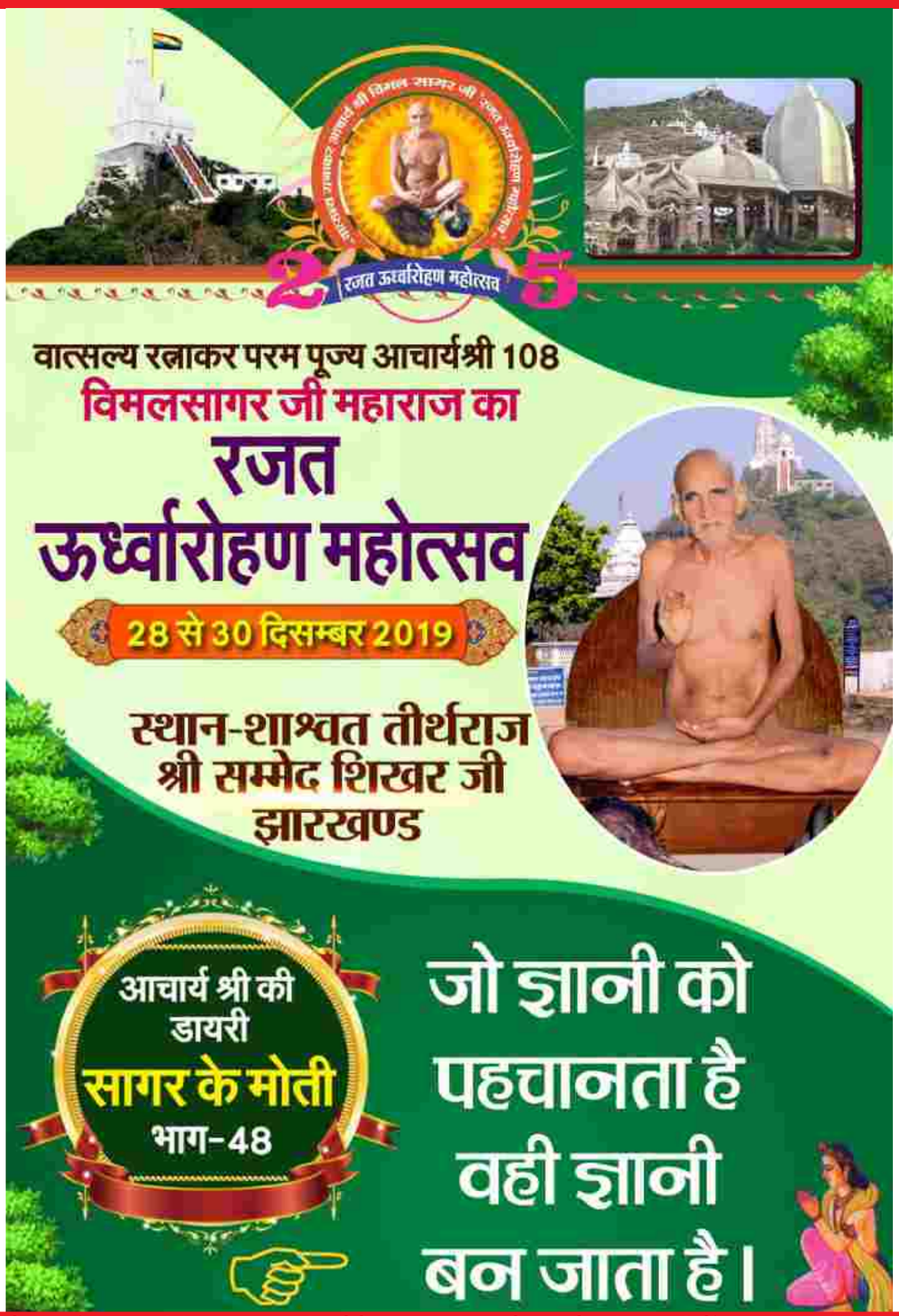

जिन के निमित्त ज्ञान से संपूर्ण विश्व परिचित था तथा जिन्होंने शाश्वत सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी में 29 दिसंबर 1994 सायंकाल 4:27 को समाधि मरण प्राप्त किया था ऐसे तीर्थोद्धारक महामना परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर समाधिस्थ आचार्य श्री 108 विमलसागर जी मुनिराज का रजत उर्ध्वारोहण महोत्सव स्थाविराचार्य 108 श्री संभवसागर जी महाराज एवं सम्मेद शिखरजी में विराजमान समस्त आचार्य देव, मुनिराज जी, आर्यिका माताजी, साधु-साध्वी एवं स्वस्तिश्री भट्टारक गणों के पावन सान्निध्य में मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर आप समस्त परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारकर वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी मुनिराज के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें

विनीत

शिखरचंद पहाड़िया-अध्यक्ष

Jain inscription discovered on wall of rock-cut cave at Lohgad fort

From: TNN | Oct 7, 2019 PUNE: A Jain inscription dating back to the 2nd or 1st century BCE was recently discovered by Shri Shrikant Pradhan, an ancient Bharatiya paintings scholar working at Deccan College Post Graduate and Research Institute.

The inscription was found on the outside wall of a rock-cut cave on the eastern side cliff of the Lohgad fort, close to Lohgadwadi village near Pune, Maharashtra.

Shri Pradhan said, "The inscription is written in the Brahmi script and the language is Prakrit influenced Sanskrit. The inscription is similar to, but more descriptive than, an inscription discovered at Pale caves by archaeologists Shri HD Sankalia and Sushri Shobhana Gokhale in 1969. It starts with 'Namo Arihantanam' which is commonly used by Jains, pointing to the fact the Lohgad cave is a Jain rock-cut cave. The inscription at Pale caves also began in a similar manner and based on Sankalia and Gokhale's study, it was assumed to be a Jain inscription."

The inscription mentions a name 'Ida Rakhita', meaning Indra Rakshita, who donated water cisterns, rock-cut benches to settlements in the area. "The inscription at Pale also mentions the same name. The new discovered inscription is 50cm-wide and 40cm-long and is written in six lines. The palaeography of both are similar, pointing to them being engraved in the same period," Pradhan said.

Shri Shrikant Ganvir, the assistant professor at the department of ancient history and culture at Deccan College, said, "The discovery of this inscription gives us insight into Jain culture and spread of Jain Dharma in the region. The Pale caves'

inscription was standalone and too limited to speak about the spread of Jain Dharma."

"Among the available scripts of Bharat, the Indus scripts are considered to be the earliest one and were 4500 years old. One kind of script that survived between the disappearance of Indus script and the emergence of Brahmi script is called as graffiti marks by the scholars," reads the report.

Ancient Jain inscription found in Chikkamagaluru district

Published in Business Standard, Mangaluru, September 12, 2019.

Historians have unearthed an unpublished Jain inscription belonging to the medieval period from a Jain Basadi in Kalasa of Chikkamagaluru district, Karnatak.

Prof T Murugeshi, associate professor of ancient history and archaeology at Mulki Sundar Ram Shetty (MSRS) College, Shirva, Udupi, said in a release that the unpublished Jain inscription recovered was in Kannada script and Kannada language. Researchers found the script beside the idol of 8th Tirthankar Chandraprabh Swami, also called as Chandranatha in this region, size of the inscription is about six inches having ten-lines, Murugeshi said.

The inscription reads 'Angirasa Savatsara Aashada Sudha Dasami Murara vivaradalu,' indicating that it was written on July 2, 1512 AD. On the specified date, Devachandra Deva, a Jain Acharya of Panasoge bali, a small village in KR Nagara in Mysuru installed the idol. Panasoge was a famous Jain centre between 11th and 12th centuries.

Acharya Devachandra hailed from the district and was the disciple of Acharya Lalita Keerti. It is learnt that in the 11th century, there were around 60 Jain Mandirs in Panasoge and Acharya Lalita Keerti was a prominent Jain Acharya.

At present, only one Jain temple exists in the area, Murugeshi said. It means the other 59 Jain Temples might had been destroyed. The inscription may be small in nature, but has significance, he said. It indirectly indicates the Shaiva and Jain conflicts in Mysuru region. Due to the religious conflict, Jains migrated to the Malnad region and moved towards the coast, Murugeshi said.

Researchers found the script on the back of Chandranatha Tirthankara idol that is about six inches

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रूपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

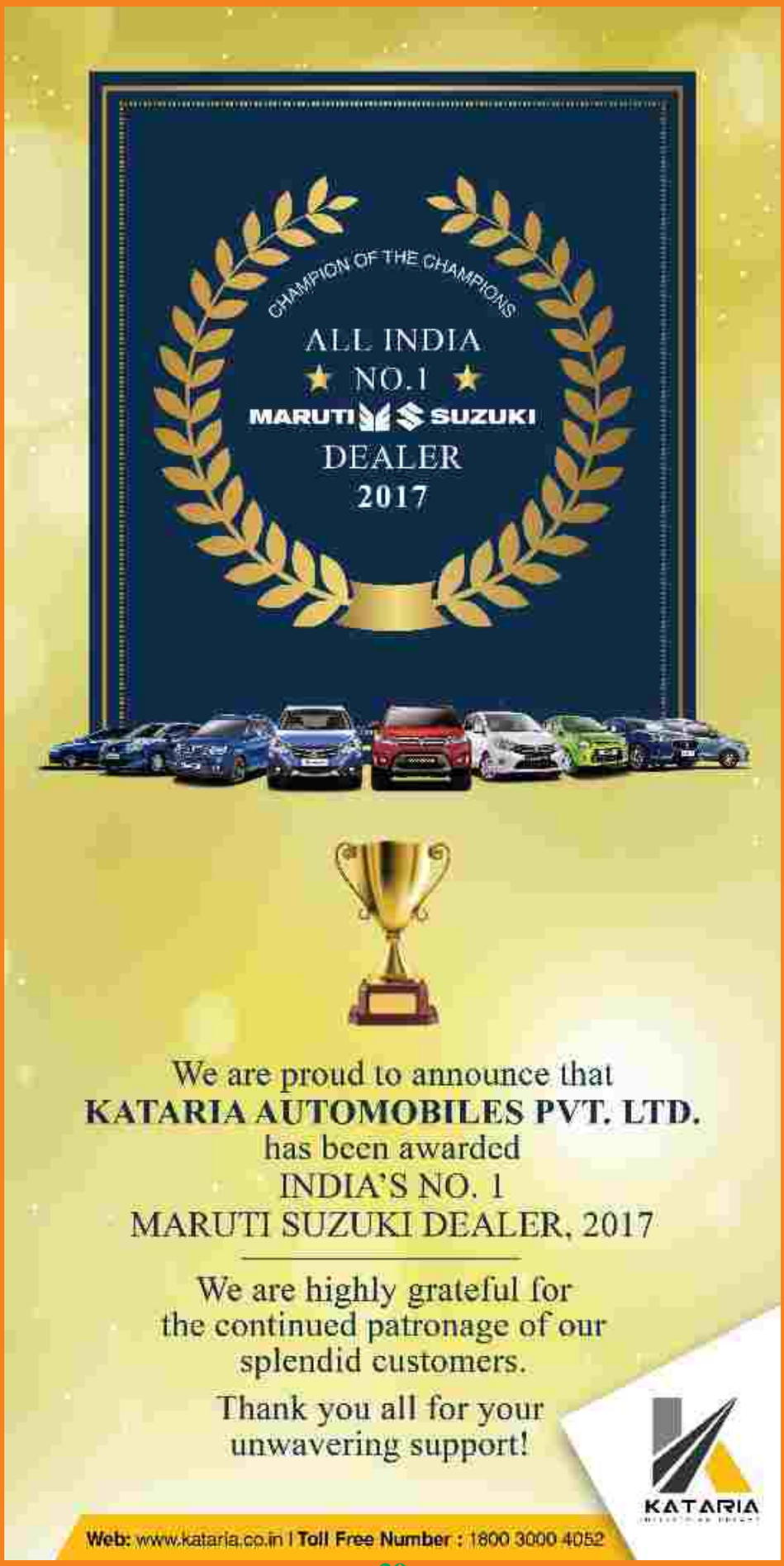
CHAMPION OF THE CHAMPIONS
ALL INDIA
NO.1
MARUTI SUZUKI
DEALER
2017
We are proud to announce that
KATARIA AUTOMOBILES PVT. LTD.
has been awarded
INDIA'S NO. 1
MARUTI SUZUKI DEALER, 2017
We are highly grateful for
the continued patronage of our
splendid customers.
Thank you all for your
unwavering support!
KATARIA
Web: www.kataria.co.in | Toll Free Number : 1800 3000 4052

Published on 16th of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019
Jain Tirthvandana, English-Hindi October 2019
at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office,
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

RNI-MAHBIL/2010/33592

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

'प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उमानाथ रामअजोर दुबे, मालिक-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004
द्वारा - त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004. से मुद्रित कर
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004 से प्रकाशित किया गया है।'